वर्ष 2023-24

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

मानव जीवन विकास समिति

पता - ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवां (बरही रोड),
जिला कटनी, मध्यप्रदेश - 483501

07626-275223 www.mjvs.org mjvs@mjvs.org

अनुक्रमणिका

क्रं.	विषय / गतिविधियां ।
1	समिति का परिचय, विजन, मिशन ।
2	समिति के 10 स्तम्भ, उद्धेश्य, रणनीति
3	ट्रेनिंग सेंटर
4	समिति का कार्यक्षेत्र – 4.1 भौगोलिक कार्यक्षेत्र 4.2 विषयगत कार्यक्षेत्र
5	गतिविधियां – • प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन • स्थायी व प्राकृतिक खेती • स्थायी आजीविका • हक और अधिकार • शासकीय योजनाओं तक पहुंच • प्रशिक्षण एवं कौशल विकास • ग्रामीण पर्यटन • स्थानीय कला का विकास • स्कालरशिप सपोर्ट • श्रीअन्न (मिलेट) महोत्सव • सुपोषण अभियान • सशक्त ग्रामसभा • नवाचार
6	उपलब्धियां
8	परियोजनाऐं ।
9	भावी योजनाएं
10	फोटो
11	मीडिया कवरेज
12	धन्यवाद्!

मानव जीवन विकास समिति

परिचयः मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, इसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था। समिति कटनी जिले के बड़वारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी गांव में अपने 30 एकड क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर संचालित है। समिति के संस्थापक व गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. के निर्देशन में समिति अपने दस स्तम्भों (अहिंसक समाज, जनता का शासन, आजीविका आधारित शिक्षा, सामाजिक समानता एवं एकता, स्थानीय कला एवं संस्कृति, स्थायी कृषि, गैर शोषित समाज, सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण, पारस्परिक सहयोग एवं सबका कल्याण) पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है। इसके अलावा समिति शिक्षा, स्वास्थ, स्वच्छता, पर्यावरण सुरक्षा, सतत् आजीविका, स्थायी व जैविक कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामीण पर्यटन, कौशल विकास प्रशिक्षण, अधिकार आदि पर काम कर रही है।

समिति विगत 23 वर्षो में अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है। समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर है। आम आदमी को मुख्यधारा से जोडने के लिये संस्था ने अनवरत प्रयास किया है।

समिति के पास आवश्यक दस्तावेज की उपलब्धता

समिति के पास सोसायटी रजिस्ट्रेशन, एनजीओ दर्पण आईडी, पेन, टेन, टीडीएस रजिस्ट्रेशन, 80जी, 12ए, एफसीआरए, सीएसआर, एनसीव्हीटी से रजिस्टर्ड, महिला एवं बाल विकास विभाग से मान्यता प्राप्त उक्त सभी आवश्यक दस्तावेज है।

सोशल मीडिया साईट की उपलब्धता है – बेबसाईट, व्हाटसअप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्यूटर, लिंकडिन, ब्लॉगर, यूट्यूब उपलब्ध है।

विजन (दृष्टि)

हमारी दृष्टि क गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर क सामाजिक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

मिशन (लक्ष्य)

हमारा लक्ष्य जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लि गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

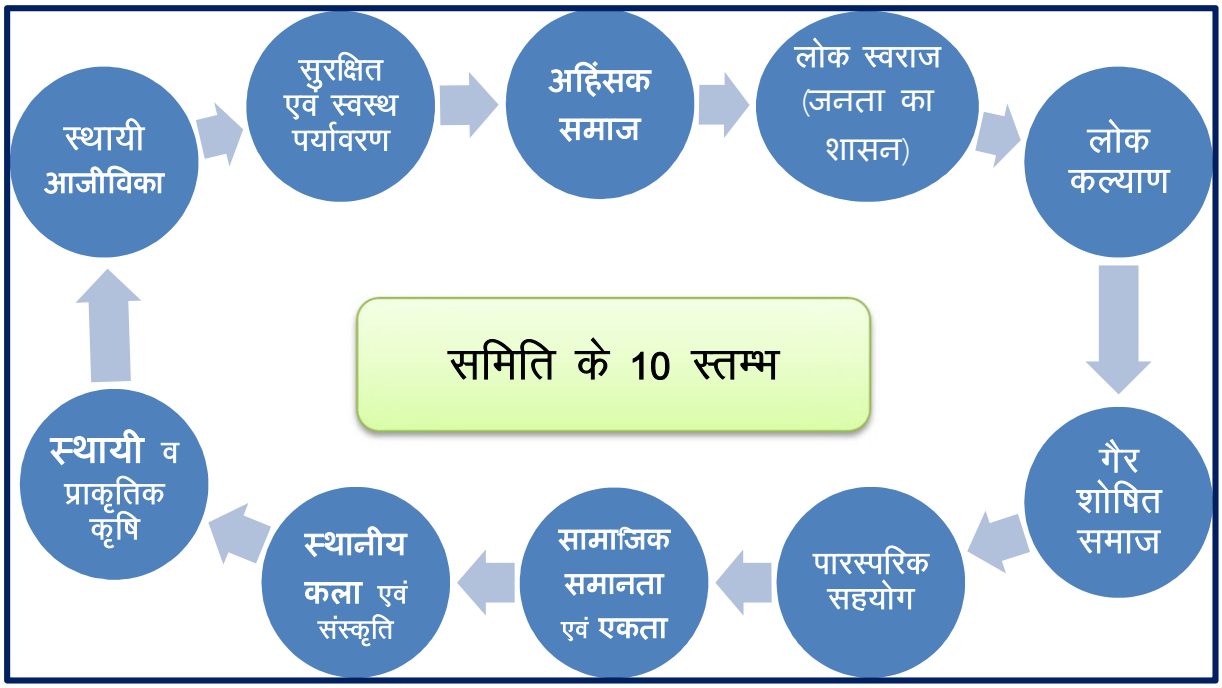

उद्देश्य

- हिंसा मुक्त समाज की स्थापना करना।
- लोक स्वराज की स्थापना।
- शोषण मुक्त समाज की स्थापना।
- पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास।
- सामाजिक समानता और एकता बनाये रखना।
- सुरक्षित एवं स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण करना
- स्थानीय कला एवं सस्कृति को बढ़ावा देना।
- स्थायी व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना।
- स्थायी आजीविका के संसाधन से जोड़ना।
- कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित करना।
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना।
- मृदा एवं जल संरक्षण।
- पर्यावरण संरक्षण।

रणनीति

- गांव का बेसलाईन कर मूलभूत सुविधाओं को समझना।
- सरकारी योजनाओं का विकेन्द्रीकरण मे मदद करना।
- जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- कार्यकर्ताओं द्वारा गांव गांव मे संगठन खड़ा करना।
- बैठक व छोटे छोटे नुक्कड़ सभाऐं आयोजित करना।
- शासकीय विभागों से तालमेल बैठाना व काम कराना।
- स्कूलों मे वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना।
- प्रशासनिक अधिकारियों के साथ संवाद स्थापित करना।
- स्वसहायता समूहों का निर्माण करना एवं संचालन।
- पंचायत जनप्रतिनिधियों का क्षमतावद्धि करना ।
- वन अधिकार अधिनियम के प्रति जन जागरूकता।
- सामाजिक कुरीतियों के प्रति जन जागरूकता।
- मूलभूत सुविधाओं पर बल देना।

ट्रेनिंग सेन्टर

मानव जीवन विकास समिति के पास स्वयं की 30 एकड़ भूमि है, जहां पर ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना कर अपने काम को आगे बढ़ा रही है। समिति का कार्यालय है यहां पर समिति अपने किये गये कामों का हिसाब किताब, लिखा पढ़ी व डाक्यूमेंटेशन का कार्य अपने कार्यकर्ता साथियों की मदद से कर रही है। ट्रेनिंग सेंटर शहर से दूर ग्रामीण क्षेत्र अन्तर्गत मझगवां (बरही रोड) एवं बिजौरी गांव के बीचों बीच अपना स्वयं का ट्रेनिंग सेंटर स्थापित कर संचालित है।

ट्रेनिंग सेंटर मे मानव जीवन विकास समिति एवं अन्य दूसरी संस्थाओं और विभागों के भी विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है। इसके अलावा क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लिमिटेड फाईनेंस कम्पनी को भी किराये से ट्रेनिंग सेंटर दिया गया है जिसमे महीने मे लगभग 15 से 20 दिन ट्रेनिंग होती है, इससे प्राप्त आय से ट्रेनिंग सेंटर एवं इसी कार्य मे लगे कार्यकर्ताओं को मदद मिलती है।

यातायात सुविधा हेतु सेंटर से 1.5 किलोमीटर मे नेशनल हाईवे एनएच–43 है जहां से कटनी, बरही व शहडोल रोड का कनेक्शन है, इसके अलावा 12 किलोमीटर मे कटनी जंक्शन है से जहां से भोपाल, रीवा, दमोह, सिंगरौली, बिलासपुर आदि रेलवे लाईन का कनेक्शन है, 100 किलोमीटर की दूरी मे जबलपुर (डुमना हवाई अड्डा है जहां से दूरस्थ क्षेत्र मे आने जाने का साधन उपलब्ध है।

ट्रेनिंग सेंटर मे उपलब्ध संसाधन

क्रं.	संसाधन	संख्या	क्रं.	संसाधन	संख्या	क्रं.	संसाधन	संख्या
1	प्रशिक्षण हाल	2	8	कम्प्यूटर : – डेस्कटॉप लैपटॉप	 8 5	15	पानी – बोरबैल्स कुंआ	 1 3
2	कान्फ्रेंस हाल	1	9	प्रिंटर/स्केनर	6	16	तालाब	2 एकड़
3	गेस्ट रूम	1	10	प्रोजेक्टर	1	17	हर्बल नर्सरी	3 एकड़
4	डोरमेट्री	3	11	इंटरनेट वाईफाई	1	18	वृक्षारोपण	15 एकड़
5	कमरे	6	12	कैमरा	1	19	कृषि भूमि	7 एकड़
6	भोजन कक्ष	1	13	साउण्ड सिस्टम	1	20	सौर ऊर्जा	1
7	पुस्तकालय	1	14	बिजली	1	21	प्रोसेसिंग यूनिट	1

ट्रेनिंग सेंटर की विशेषताएं

- स्वयं का आवासीय परिसर उपलब्ध है।
- स्वच्छ वातावरण एवं पर्यावरण की उपलब्धता।
- प्रशिक्षण हाल एवं कान्फ्रेंस हाल की सुविधा।
- विषय विशेषज्ञ की उपलब्धता है।
- विविध प्रकार के डिमांस्ट्रेशन की उपलब्धता।
- प्रोजेक्टर से प्रजेंटेशन की सुविधा।
- वाईफाई इंटरनेट की सुविधा।
- साउण्ड सिस्टम एवं कैमरे की व्यवस्था।
- कम्प्यूटर एवं फोटोकॉपी की सुविधा है।
- सोलर बिजली की उपलब्धता।
- हर्बल नर्सरी की उपलब्धता।
- लाईब्रेरी एवं प्रोसेसिंग यूनिट है।

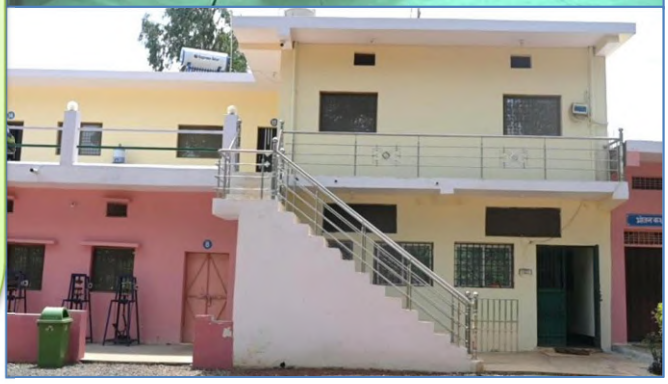

समिति का कार्यक्षेत्र

राज्य	जिला	ब्लॉक	ग्राम पंचायत	गांव
मध्यप्रदेश	11	16	62	127
राजस्थान	4	4	2	2
केरल	3	3	5	5
उत्तराखण्ड	1	1	5	5
छत्तीसगढ़	6	6	6	6
बिहार	4	4	4	4
उड़ीसा	1	1	1	1
टोटल	**30**	**35**	**85**	**150**

भौगोलिक कार्य क्षेत्र

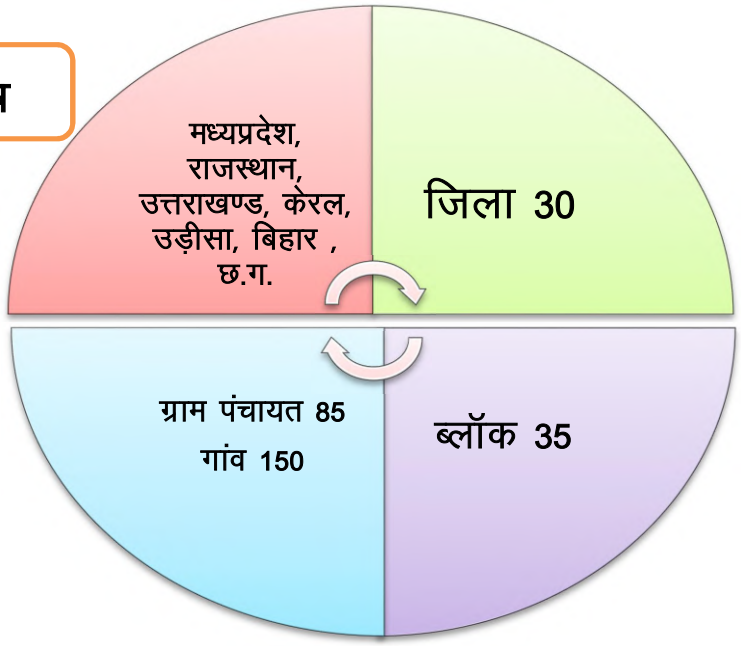

विषयगत कार्यक्षेत्र

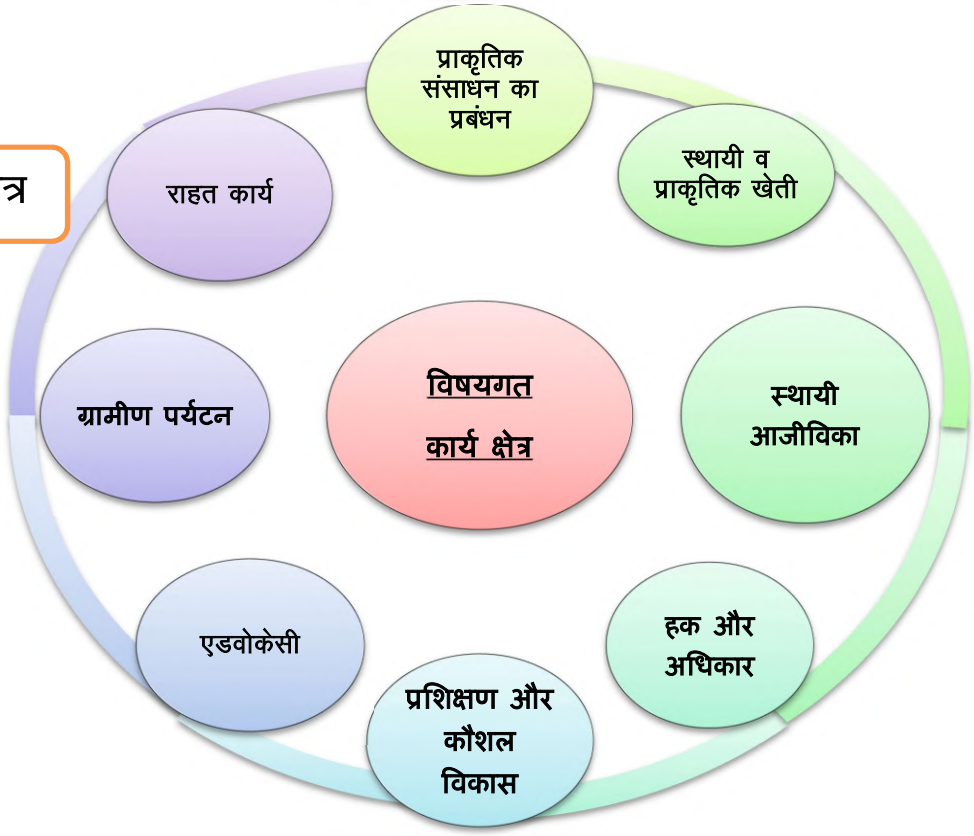

प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन

प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन जो उपयोगी हो या फिर अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोगी बनाये जा सकते है प्राकृतिक संसाधन है। जैसे हवा, पानी, मृदा, वन, खनिज, झील, नदि, कुंआ, तालाब, जीवाश्म ईधन और जैवविविधता शामिल है। इसलिए कहा जाता है कि प्राकृतिक संसाधन हमे पर्यावरण से मिलते है।

प्राकृतिक संसाधन को बनाये रखने के लिए समिति द्वारा पर्यावरण के अवसर पर अधिकांश मात्रा मे वृक्षारोपण कराते है। पेड़ कटने से बचाया जा रहा है, क्योंकि पेड़ कटने से बारिस का पानी तेजी से गिरने के कारण मिट्टी का कटाव ज्यादा होता है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती है।

मृदा और जल प्रबंधन :

भूमि प्रबंधन और जल प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके बिना खेती संभव नही है। कृषि योग्य भूमि मे जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्षा का जल बेकार न जाये इसके लिए छोटे छोटे जल संरचनायें बनाये जा रहे है। सामुदायिक और व्यक्तिगत तालाब, चैकडेम, स्टाप डेम और बोरी बंधान कराकर जल संरक्षण किया जा रहा है।

बारिस का पानी रोकने के लिए मेढ़बंदी, तालाब, डेम, चैक डेम, कंटूर निर्माण, वृक्षरोपण कराकर मिट्टी के कटाव को रोका जा रहा है। किसानों का कहना है कि आसपास के कुंआ, बोर बेल्स भी रिचार्ज हो रहे है। खेतों को पर्याप्त पानी मिलने से फसल का उत्पादन भी अच्छा हो रहा है।

पर्यावरण संरक्षण एवं संवंर्धन :

पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें सर्वप्रथम इस धरती को प्रदूषण रहित करना होगा। पर्यावरण अर्थात् जिस वातावरण में हम रहते हैं। हमारे आस पास मौजूद हर एक चीज, जीव.जंतु, पक्षी, पेड़.पौधे, व्यक्ति इत्यादि सभी से मिलकर पर्यावरण की रचना होती है। हमारा इस पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है और हमेशा रहेगा। प्रकृति और पर्यावरण की अद्भुत सुंदरता देखते ही हृदय में खुशी और उत्साह का संचार होने लगता है। पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए लोगों को निःशुल्क पौधे वितरण कर घर के आसपास, खेतों व सार्वजनिक जगहों मे पौधा लगवाया जा रहा है।

स्थायी व प्राकृतिक खेती

सभी को जैविक तरीके की खेती को अपनाना होगा इस परिपेक्ष्य मे किसानों को जागरूक किया गया है। समिति अपने तरीके से कार्यक्षेत्र के गांव मे कार्यकर्ताओं की मदद से किसानो को जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। खेती मे गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद के अलावा कीटनाशक की जगह गौ–मूत्र, नीमास्त्र, घन जीवामृत, बीजामृत, मटका खाद, पंचगब्य का उपयोग करना बताते और सिखाते है। पौधो को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए अलग अलग फसलों के लिए अलग अलग पोषक तत्व की आवश्यकता होती है जिसे जैविक तरीके से निर्माण कर किसान उपयोग कर रहे है। (जैसे राइजोबियम, ऐजेक्टोबेक्टर, ट्राइकोडरमा का उपयोग करते है)। जैविक कीट नियंत्रण मे अग्नयास्त्र, नीमास्त्र, तुलास्त्र, हींगास्त्र, लमित, मठास्त्र आदि का प्रयोग कर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे उत्पादकता मे लगातार वृद्धि हो रही है। जैविक खेती करने वालों की संख्या बढ़ रही है।

प्राकृतिक खेती से तात्पर्य है कि प्रकृति ने जो कुछ भी हमे दिया है उसी से प्राप्त संसाधानों के उपयोग से अपनी खेती को बढ़ाने का काम करेंगे। हम बाजार पर निर्भर नही होते है। 6000 किसान लाभान्वित हो रहे है।

जैविक खेती से तात्पर्य है हम जैविक खाद, बीज और दवाईयों का उपयोग कर खेती करते है परन्तु अपने पास ये संसाधन उपलब्ध न होने पर बाजार से खरीदकर भी उपयोग कर लेते है लेकिन जैविक ही हो। 7500 किसान लाभान्वित हो रहे है।

गैर कीटनाशी प्रबंधन खेती से आशय है इस प्रकार की खेती मे पेस्टिसाईड पूर्णतः प्रतिबंधित रहता है लेकिन रासायनिक खाद का उपयोग कर सकते है। 6869 किसान लाभान्वित हो रहे है।

श्री विधि से धान की खेती

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक तथा दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के **150 गांव मे 15000 किसानों** को श्री विधि से धान की रोपाई करने प्रेरित कर खेती कराई है। इससे किसानों का कहना है हमारी खेती की लागत मे कमी आई है और उत्पादन अधिक होगा। इसमे किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है। कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद का उत्पादन कर रहा है और कीटनाशन दवाईया भी स्वयं तैयार कर फसल मे उपयोग कर रहे है। रासायनिक खाद और कीटनाशक मे किसानों का अधिक खर्चा आता था अब वह खर्चा शून्य हो गया जिससे किसानों मे खुशी की लहर है।

प्राकृतिक व जैविक विधि से गेहूं की खेती

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कार्यक्षेत्र दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा व जबेरा ब्लॉक तथा कटनी जिले के बड़वारा व ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक की **60 पंचायत के 150 गांव मे 7750 किसानों** के साथ गेहूं की खेती जैविक तरीके से कराया गया है। जैविक खेती कर रहे किसानों को कृषि व उद्यानिकी विभाग से जोड़कर सरकारी योजना के तहत गेहूं का बीज 422 किसानों को दिलाया गया है जिससे किसान राहत भरी सांस का अनुभव कर रहे है। सालों साल प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की संख्या मे इजाफा होता जा रहा है। एक किसान अपने आसपास के लगभग 10 किसानों को प्रभावित करता है जिससे पता चलता है कि प्राकृतिक खेती फायदेमंद है शुद्ध अनाज मिलता है और स्वास्थ के लिए लाभकारी भी है।

रासायनिक युक्त उत्पादित अनाज के उपयोग से आये दिन लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता नजर आता था जिससे आकड़ा लगाया गया कि प्रति व्यक्ति सालाना आय मे से 25 से 30 प्रतिशत पैसा डाक्टरों के पास चला जाता था, अस्वस्थ होने से कही मजदूरी भी नही कर पाते थे। इससे महसूस हुआ की अच्छा स्वास्थ रखने के लिए हम सभी को प्राकृतिक व जैविक खेती को अपनाना होगा। इसके लिए समिति के प्रयास से किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है। प्राकृतिक खेती से किसानों की आय मे 25 से 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। किसानों द्वारा मिली जानकारी के मुताविक बताया गया कि जैविक पद्धति से खेती करने पर खाद व दवाई पर होने वाला समस्त खर्च बच रहा है।

जैविक खाद एवं दवाईयां :

प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के साथ मिलकर जैविक खाद व दवाईयां बनायी गई। जिसमे मुख्यतः **कम्पोस्ट खाद, वर्मी कम्पोस्ट खाद और अग्निअस्त्र, मठास्त्र, नीमास्त्र, दसपर्णी, जीवामृत, घन जीवामृत, ब्रम्हास्त्र आदि** प्रकार की दवाईयां किसान तैयार कर अपने खेत मे उपयोग कर रहा है।

किचन गार्डन

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कार्यक्षेत्र के किसानों को किचन गार्डन तैयार करने सब्जी का बीज समिति द्वारा किसानों को किचिन गार्डन प्रमोशन हेतु सब्जियों का बीज निःशुल्क वितरण किया गया। **कार्यक्षेत्र के लगभग 500 किसान किचन गार्डन तैयार कर रहे है,** जहां पर प्रत्येक किसान 10 प्रकार के सब्जी पालक, मेथी, लाल भाजी, गोभी, टमाटर, मिर्ची, प्याज, धनिया, मूली, गाजर, आलू का उत्पादन करेंगे।

इसके लिए विचार किया जा रहा है कि जैविक सब्जी का बाजार भी अलग से लगाया जाये ताकि किसान जैविक सब्जी का अच्छा मूल्य प्राप्त कर सके। कई जगह जैविक व आर्गनिक सब्जियों के बाजार उपलब्ध भी हो गये है जहां से लोगों को आसानी से प्राप्त हो जाता है।

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 150 किचिन गार्डन, ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे 100 किचिन गार्डन तैयार कराये गये।

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक मे 150 किचिन गार्डन, जबेरा ब्लॉक मे 100 किचिन गार्डन तैयार कराये गये है।

''किचिन गार्डन लगाने के फायदे''

- किचिन गार्डन लगाने से किसानों को अपने घर पर शुद्ध व जैविक सब्जियां मिलेगी, जिसका असर सीधा स्वास्थ पर पड़ेगा सभी स्वस्थ और निरोगी होंगे।
- अपने घर पर सब्जियां लगी होने से जब कभी जरूरत होती है उसी समय ताजी सब्जी तोड़कर बनाते है जिससे ज्यादा पोषक तत्व मिलता है।
- स्वस्थ रहने के लिए पोषक तत्व की महती आवश्यकता है, इसकी कमी को पूरा करने के लिए किचिन गार्डन कारगर सिद्ध हुआ है।
- किचिन गार्डन मे तरह तरह के सब्जियां उत्पादित कर पोषण युक्त भोजन कर रहे है।
- किचन गार्डन से **सप्ताह मे 500 से 600 रूपये यानि महीने मे 2000 से 3000 रूपये** तक की बचत हो रही है।

जैव उत्पाद इकाई केंद्र

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ और दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के 85 गांव मे 8500 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना :

कटनी जिले के **बड़वारा ब्लाक के 4 गांव महगवां भजिया भादावर और पठरा मे** और **ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक के 5 गांव खंदवारा दैगवा सलैया पिपरिया चांद और जामुनचुआ मे जैव उत्पाद इकाई केंद्र की स्थापना की गई है।**

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के अलग अलग गांव मे 7 जैव उत्पाद इकाई की स्थापना की गई है।

जैव उत्पाद इकाई केन्द्र की पहचान अपने गांव से लेकर जिले व प्रदेश मे भी बन रही है। इस प्रकार के केन्द्र गांव और जिले के लिए पहली बार चलाये गये है जिससे प्रशासन का भी सहयोग मिलता है जहां कही भी जैव उत्पाद की प्रदर्शनी लगानी होती है प्रशासन की तरफ से जरूरी जानकारी मिलती है और समूह के द्वारा अपने जैव उत्पाद की प्रदर्शनी लगाई जाती है। प्रदर्शनी मे स्व–सहायता समूह की महिलाओं द्वारा ही प्रदर्शनी लगाई जाती है और सभी हिसाब किताब भी समूह द्वारा ही रखे जाते है।

जैव उत्पाद इकाई केंद्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किया जाना तय किया गया है। जहां पर 14 से 15 प्रकार की जैविक दवाईयां एवं खाद उपलब्ध है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा। जैव उत्पाद इकाई केन्द्र से लगभग 7 से 10 हजार रूपये तक की आय अर्जित करते है।

जैव उत्पाद जैसे गौमूत्र, दसपर्णी, घनजीवामृत, अग्निअस्त्र, जीवामृत, लमित, नीमास्त्र और पंचगब्य आदि उत्पाद तैयार कर केन्द्र मे रखा जायेगा और इसे तैयार करने वाले समूह व किसान को उचित पारिश्रमिक दिलाया जायेगा। समूह सदस्यों ने जैव उत्पाद तैयार करने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है और अपने अपने घरों मे या सामूहिक रूप से जैव उत्पाद तैयार कर रहे है। इन सभी उत्पादों को एफ.पी.ओ. एलाईव ब्रांडिंग की मदद से बाजार पर उतारा जा रहा है।

बीज बैंक

बीज बैंक : किसानों का मानना है कि बीज बैंक मे अनाज रखने से गांव मे जरूरतमंद किसानों को आसानी से प्राप्त हो जाता है उन्हे किसी दुकान और साहूकारो से बढ़े हुए दामो मे नही लेना पड़ता है। बीज बैंक का संरक्षण और हिसाब किताब भी समूह सदस्य के पास ही है। बीज बैंक का संचालन स्व–सहायता समूह सदस्य महिलाओं एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों के द्वारा किया जा रहा है। बीज बैंक खुलने से महिलाओं को रोजगार मिलेगा।

बीज बैंक मे 20 से 25 अलग अलग प्रकार के धान, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूर, मूंग, मटर, चना, सरसो और सब्जियों के बीज को भी संगृहीत कर रखा गया है। बीज बैंक मे विलुप्त हो रही प्रजातियों को इकट्ठा कर रखा है।

बीज एकत्रीकरण :

दमोह जिले के **जबेरा** ब्लॉक **में 2 क्विंटल और तेंदूखेड़ा में 2 क्विंटल** धान **के बीज 5 किलोग्राम अरहर के बीज और 10 किलोग्राम मक्का के बीज एकत्र किए गए।**

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे धान 2.30 क्विंटल, कोदो 1.20 क्विंटल और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे धान 4.20 क्विंटल, कोदो 3.50 क्विंटल, कुटकी 0.42 क्विंटल इकट्ठा कर बीज संरक्षित किया है।

बीज बैंक केन्द्र की स्थापना :

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव समदई, धनगौर, सेहरी, धनेटामाल, हर्रई मे और जबेरा ब्लॉक के 5 गांव चौरई, पिपरिया, डेलनखेड़ा, भिनैनी, पटी सिंगोरगढ़ मे बीज बैंक की स्थापना की गई है। **कटनी जिले के** बड़वारा ब्लॉक के 7 गांव भदौरा नं.1, बनहरा, बरगवां नं.2, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा सेझा, बरगवां नं.1 मे और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादरसिहुडी, सरई, कुदरा, सर्रा, पहरूआ मे बीज बैंक की स्थापना की गई है।

बीज बैंक से होने वाले फायदे :

- कटनी और दमोह जिले के 57 ग्राम पंचायत के 150 गांव मे 15500 किसानों को सीधा लाभ पहुंचेगा।
- किसानों को आसानी से और कम मूल्य पर बीज उपलब्ध हो जायेगा।
- बाजार पर निर्भरता कम होगी।

गैर कीटनाशी प्रबंधन

मानव जीवन विकास समिति द्वारा गैर कीटनाशी प्रबंधन प्रणाली से किसानों को अधिक लाभ मिल सके इसके लिए समिति लगातार किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करती है। समिति द्वारा अधिक से अधिक प्रशिक्षण आयोजित कर 4000 से 5000 किसानों को प्रशिक्षित कर जैविक व प्राकृतिक खेती की ओर ले जाया गया। समिति का मानना है कि प्रशिक्षण प्राप्त किसान जैविक खेती को बढ़ावा देंगे। जैविक खेती कर किसान अपने साथ दूसरे किसान को भी जोड़ने का काम करेंगे। जैविक दवाईया बनाने मे कटनी और दमोह जिले के 145 समूह सदस्य लगे है।

1. **जैविक खाद–** गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद, नाडेप व भू–नाडेप खाद, मटका खाद।
2. **कीटनाशक दवाईयां**– गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, अग्नास्त्र, तुलास्त्र, हींगास्त्र, मठास्त्र, दसपर्णी।
3. **पोषक तत्व प्रबंधन** – घन जीवामृत, बीजामृत, पंचगब्य, अजोला।

गैर कीटनाशी प्रबंधन का मुख्य उद्धेश्य खेती मे कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए विभिन्न तकनीकों का अनुशरण करना है।
जैविक कीटनाशी का उपयोग : जैविक कीटनाशक खेती मे कीटो और रोगों को नियंत्रित करने मे मदद करता है। इनमे नीम के बीज, नीम के पत्ते, नीम के तेल, नीम के खाद्य आदि शामिल है।

गैर कीटनाशी प्रबंधन के फायदेः

- जैविक खाद का उपयोग रासायनिक खाद की अपेक्षा बेहतर होता है।
- जैविक खेती मे लागत कम और उत्पादन ज्यादा होता है।
- जैविक दवाईयां और पोषक तत्व प्रबंधन आसानी हो जाता है।
- जैविक खेती से किसान फसल पर आसानी से कीट नियंत्रण पा लेता है।
- पशुपालन को भी प्राथमिकता मिल रहा है।

जैविक खाद प्रबंधन

केचुआ द्वारा जैव -विघटनशील व्यर्थ पदार्थों के भक्षण तथा उत्सर्जन से उत्कृष्ट कोटि की कम्पोस्ट) खाद (बनाने को **वर्मीकम्पोस्टिंग** कहते हैं। वर्मी कम्पोस्ट को मिट्टी में मिलाने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति तो बढ़ती ही है साथ ही साथ फसलों की पैदावार व गुणवत्ता में भी बढ़ोत्तरी होती है। रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक इस्तेमाल से मृदा पर होने वाले दुष्प्रभावों का वर्मी कम्पोस्ट के उपयोग से सुधार होता है। इस प्रकार वर्मी कम्पोस्ट भूमि की भौतिकए रासायनिक व जैविक दशा में सुधार कर मिट्टी की उपजाऊ शक्ति को टिकाऊ करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी और दमोह जिले के 57 ग्राम पंचायत के 150 गांव मे 15500 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन समिति अपने कार्यकर्ता साथियों के सहयोग से कर रही है। समिति का मानना है कि किसानों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो इसके लिए सर्वेक्षण के आंकडे अनुसार किसानों के साथ अलग अलग गतिविधियां आयोजित की जा रही है। भूमिधारी किसानों के साथ भूमि के डवलपमेंट के साथ प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। भूमिहीन किसानो के साथ पशुपालन और स्व–रोजगार के माध्यम से व्यवसाय स्थापित कराकर उनकी आजीविका सुनिश्चित करने प्रयास किया जा रहा है।

वर्मी कम्पोस्ट

वर्मीकम्पोस्ट केंचुओं की मदद से कचरे को खाद में परिवर्तित करने हेतु केंचुओं को नियंत्रित वातावरण में पाला जाता है। इस क्रिया को वर्मीकल्चर कहते हैं। केंचुओं द्वारा कचरा खाकर जो कास्ट निकलती है उसे एकत्रित रूप से **वर्मी कम्पोस्ट** कहते हैं।

वर्मीकम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए किसानों को जागरूक किया जा रहा है। कृषि और उद्यानिकी विभाग के सम्पर्क कर सरकारी योजना का लाभ दिलाने किसानों को विभाग से लिंक कराने समिति लगातार प्रयासरत है। विभाग के माध्यम से किसानों को वर्मीवेड और वर्मीवर्म दिया जाता है जिसमे भी समिति मदद करती है।

यह की वर्मीवेड और वर्मीवर्म जब बाजार से खरीदकर किसानों के यहां डिमांस्ट्रेशन लगाने के लिए मानव जीवन विकास समिति का योगदान रहता है। एक वर्मीवेड की कीमत लगभग 1800 रूपये पड़ता है जिसमे किसान का योगदान लगभग 25 प्रतिशत 450 रूपये लेकर 70 प्रतिशत 1350 रूपये समिति का योगदान देकर चिन्हित किसानों के यहां वर्मीवेड लगवाकर प्रत्येक किसान को 2 किलोग्राम केचुआ लगभग 800 रूपये का समिति सहयोग करती है।

किसानों का मानना है कि कम्पोस्ट और वर्मी कम्पोस्ट खाद के प्रयोग से हमारा रासायनिक खाद मे होना वाला अनावश्यक खर्च बच जाता है। यह भी निकलकर आया कि जैविक खाद के उपयोग से फसल उत्पादन मे बढ़ोत्तरी हुई है। इससे सिद्ध होता है कि खेती की लागत कम और उत्पादन ज्यादा होता है।

वर्मी कम्पोस्ट के लाभ

- वर्मी कम्पोस्ट एक अच्छी किस्म की खाद है तथा साधारण कम्पोस्ट या गोबर की खाद से ज्यादा लाभदायक है।
- केंचुओं युक्त जमीन में भूमि का क्षरण रुकता है। केंचुओं के कारण वातावरण स्वस्थ रहता है।
- खेती लाभकारी तथा निरंतर बनी रहती है। फसलों के दानों में चमक एवं सुगंध बढ़ाता है।
- वर्मी कम्पोष्ट भूमि से रसायनिक उर्वरकों के विषैले प्रभाव को कम करता है।
- वर्मी कम्पोष्ट भूमि के कार्बनिक पदार्थों की मात्रा को बढ़ाता है।
- वर्मी कम्पोष्ट के प्रयोग से लाभदायक जीवाणु की संख्या बढ़ती है।

भू–नाडेप :

भू–नाडेप आसानी से तैयार किया जाता है इसे समतल भूमि पर छायादार स्थान मे 5 फिट चौड़ाई में व 10 से 12 फिट लम्बाई में भूमि को समतल किया जाता है इसे गोबर से लीप लिया जाता है फिर 6 इंच गोबर कचरे की परत बिछाई जाती है, इसे पानी से अच्छी तरह से गीला किया जाता है, फिर आधा से एक इंच मिटटी की परत डालते हैं इसे भी पानी से गीला करते हैं इसी तरह परत दर परत 4 फिट ऊॅचाई तक तैयार करते हैं। अंत में चारों तरफ से व ऊपर से गीली मिट्टी लपेटकर बंद कर देते हैं। तीन माह में यह पच कर तैयार हो जाता है आवश्यकतानुसार इसमें जैविक कल्चर मिलाए जाने चाहिए।

भू नाडेप) कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 68 और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक मे 46 भूनाडेप बनवाये गये है।

भूनाडेप खाद : यह एक प्रकार का जैविक खाद है जो खेती के काम आती है।

पौधों के विकास मे सहायक : भूनाडेप खाद मे नामकरणतत्वों की अच्छी मात्रा होती है जो पौधों के विकास लिए आवश्यक है।

मिट्टी की गुणवत्ता मे सुधार : यह मिट्टी को उपर्युक्त गुणवत्ता प्रदान करती है जिससे पौधों का अच्छा विकास होता है।

पौधों की संरक्षा : यह पौधों को बीमारियों और कीटों से बचाने मे मदद करती है।

जल संचयन की क्षमता : भूनाडेप खाद जल संचयन की क्षमता बढ़ाती है जो सूखे के समय मे पौधों के लिए महत्वपूर्ण होताहै।

नाडेप खाद :

नाडेप विधि खाद तैयार करने की बहुत प्रचलित विधि है इसमें 5 फिट चौंडाई व 12 फिट लम्बाई में भूमि को समतल कर साफ कर लिया जाता है फिर ईटों की सहायता से 9 इंच चौड़ाई की दीवालें तैयार कर बनाया जाता है। यह दीवालें रंध्रयुक्त (जिनमें छिद्र किए जाते हैं) होती हैं। इसे 4 फिट ऊॅचाई का बनाया जाता है।

नाडेप कम्पोस्ट के कुछ महत्वपूर्ण फायदे हैं:

1. **उच्च गुणवत्ता**: नाडेप कम्पोस्ट बहुत उच्च गुणवत्ता की होती है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, और अन्य सूक्ष्म तत्व पाए जाते हैं।
2. **पर्यावरण के लिए उपयोगी**: नाडेप कम्पोस्ट अपने खेत से आने वाले पुआल घास, खरपतवार पत्तियां, घर का झाड़न, और पशुओं के गोबर का उपयोग करके तैयार की जाती है।
3. **जैविक खेती के लिए उपयोगी**: जैविक खेती में उपयोगी होती है और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।
4. **सामुदायिक उत्पादन**: नाडेप कम्पोस्ट को सामुदायिक रूप से तैयार किया जा सकता है, जो गांव के लोगों के लिए आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से उपयोगी होता है।

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक मे 12 नाडेप बनवाये गये है।

जैविक दवाईयां एवं पोषक तत्व प्रबंधन :

दसपर्णी : प्राकृतिक सामग्री का उपयोग करके तैयार किया गया दसपर्णी अर्क सभी प्रकार के कीड़ों और बीमारियों को नियंत्रित करने मे बहुत प्रभावी है। यह पौधे की समग्र प्रतिरक्षा को मजबूत करता है, यह जीवाणु प्रतिरोधक और फफूंदरोधक है। किसान इसे घर पर तैयार कर सकते है।

जीवामृत : जीवामृत खाद मिट्टी मे सूक्ष्म जीवो की वृद्धि करने मे सहायक होते है। इस तरल खाद मे अधिक मात्रा मे सूक्ष्म जीव होते है जो मिट्टी मे भी गुणात्मक वृद्धि से मिट्टी को सजीव बनाते है और यही सूक्ष्म जीव पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने मे सहायक होते है।

घन जीवामृत : यह बहुत ही उपयोगी खाद है। इसे किसान डी.ए.पी. के स्थान पर उपयोग कर रहे हैं, इसे खेत में डालते समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है।

अग्निअस्त्र : यह तना छेदक व रस चूसक दोनों ही प्रकार के कीटो को नियंत्रित करने के लिए उपयोग में लाया जाता हैं यह अत्यंत तीव्र असरकारक होता हैं किसान इसका भी उपयोग कर रहे है।

लमित : रस चूसक कीट से नियंत्रण पाने के लिए किसानो द्वारा लमित तैयार कर फसलो मे डाला जा रहा है।

नीमास्त्र : नीमास्त्र भी रस चूसक कीड़ों को व तना छेदक कीटों को नियंत्रित करता है जो मुख्यतः नीम की पत्ती से तैयार किया जाता है।

पंचगब्य : पंचगब्य बहुत ही प्रभावकारी तरल खाद है हमारे ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख किया गया है। पंच गब्य का अर्थ है पंच गब्य (गाय से प्राप्त पॉच पदार्थो का घोल) अर्थात् गौमूत्र, गोबर, दूध, दही और घी के मिश्रण से बनाए जाने वाले पदार्थ को पंचगब्य कहते हैं। खेती मे उत्पादन क्षमता को बढाने के साथ साथ यह फसल में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है।

मठास्त्र

अग्निअस्त्र

नीमास्त्र

घन जीवामृत

दसपर्णी

जीवामृत

पोषक तत्व प्रबंधन

स्थायी आजीविका

स्थायी आजीविका की बात करें तो चाहे खेती हो या स्वरोजगार दोनों शामिल है। खेती कर रहे किसानों को अपनी स्वयं की जमीन को भूमि समतलीकरण कर खेती लायक बनाना, सिंचाई हेतु पानी की सुविधा उपलब्ध कराना, प्राकृतिक खेती की ओर मोड़ना जिससे अपने पास प्राप्त संसाधनों से ही अच्छी खेती से उपज लिया जा सके। खेती को बढ़ावा देने के लि खेती की लागत करने पर भी काम किया जा रहा है। खेतीहर किसानों को जैविक खाद बनाना और जैव कीटनासी दवाईयां बनवाकर खेती मे उपयोग करने प्रेरित किया जा रहा है।

मुख्यतः व्यावसायिक खेती और व्यावसायिक सब्जी उत्पादन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मछलीपालन, हस्तकला शिल्प तथा व्यावसाय स्थापित कर आजीविका सुनिश्चत करना शामिल है।

पशुधन प्रबंधन

कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के किसानों के साथ समिति स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने कार्यक्रम का संचालन कर रही है। समिति का मानना है की कार्यक्षेत्र के सभी हितग्राही का स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो। कृषि पर आधारित किसानों के साथ प्राकृतिक व जैविक कृषि को बढ़ावा देने समिति निरंतर प्रयासरत है। भूमिहीन किसानों के साथ पशुपालन व स्वरोजगार स्थापित कराने की ओर अग्रसर है।

पशुपालन विभाग के मुर्गी पालन योजना के तहत बड़वारा ब्लॉक में 19 हितग्राहियों को और ढीमरखेड़ा ब्लॉक में 41 हितग्राहियों को 40 . 40 चूजे प्रदान किये गए। इस योजना से लाभान्वित किसान की स्थाई आजीविका सुनिश्चित होगी।

कुक्कुट पालन) Poultry farming) एक महत्वपूर्ण पशुसंवर्धन क्षेत्र है जिसमें मुर्गीपालन किसान कर रहे है।

कुक्कुट पालन के महत्वपूर्ण बिंदु: प्रजातियों का चयन :अच्छी जाति के मुर्गे और मुर्गियों का चयन किसान को बताया जाता है। आवास और व्यवस्था :उचित आवास और है। व्यवसायिक योजना :अच्छी व्यवसायिक योजना बनाएं जिसमें लाभ, खर्च और आवश्यक संसाधनों का विवरण हो। सुरक्षित व्यवस्था के साथ मुर्गीधानी बनवाया गया है। पोषण और देखभाल :उचित पोषण, पानी और स्वच्छता की देखभाल के तरीके बताये गए। बीमारियों का प्रबंधन :बीमारियों से बचाव के लिए उचित वैक्सीनेशन और दवाओं का प्रयोग करें किसान को व्यवस्थित टाईमलाईन बताया गया।

व्यावसायिक सब्जी प्रबंधन

सब्जी उत्पादन को व्यावसायिक स्तर बढ़ावा देने किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह कि सब्जी व्यावसाय बारहमासी अच्छी आय अर्जित करने वाली फसल मे से एक है। मनुष्य जीवन के दैनिक उपयोग वस्तु होने से व्यापार मे भी कोई समस्या नही होती है और बाजार भी ढूढ़ने की आवश्यकता नही पड़ती है। किसान को ऐसे उत्पादन के लिए खेत की अच्छी उपजाऊ मिट्टी और सिंचाई सुविधा का होना आवश्यक है। माना जाता है कि धान व गेहूं के उत्पादन की अपेक्षा सब्जी उत्पादन ज्यादा उपयोगी है।

समिति अपने कार्यक्षेत्र के गांव मे ऐसे 150 बड़े किसानों को चिंहित कर व्यावसायिक सब्जी उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन किसानों को कृषि विभाग एवं उद्यानिकी विभाग के सहयोग से आवश्यक तकनीकी सुविधा उपलब्ध कराया जाता है।

हक और अधिकार (पात्रता/हकदारी)

वन अधिकार अधिनियम (एफ.आर.ए.) : वन अधिकार कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूक किया गया ताकि वन क्षेत्र मे काबिज हितग्राहियों को पट्टा प्राप्त हो सके। वन अधिकार कानून 2006 के तहत लोगों के काबिज भूमि का वन एप मित्र के माध्यम से लोगों के आवेदन भरवाये गये ताकि पात्र हितग्राही को हकदारी मिल सके। वन अधिकार के तहत वन एप मित्र से प्राप्त आवेदनों के माध्यम से लोगों को काबिज भूमि का पट्टा मिला है। इस कानून के तहत अधिक से अधिक लोगों के दावा आपत्ति के फार्म भरवाये गये है, इसके बाद सम्बंधित पटवारी, आरआई व तहसीलदार से संवाद व पत्राचार भी कराया गया है जिसके माध्यम से आवेदनों की छानबीन कर वास्तविक पात्र हितग्राही को काबिज भूमि का पट्टा व अधिकार पत्र दिलाया गया है।

एम.पी. वनमित्र पोर्टल मे पंजीयन : मानव जीवन विकास समिति अपने फील्ड कार्यकर्ताओं की सहायता से कटनी जिले के ढ़ीमखेड़ा और बड़वारा ब्लॉक एवं दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के किसानों को एमपी वनमित्र पोर्टल मे काबिज भूमि का दावा फार्म भरवाने की जानकारी के साथ गांव गांव मे जाकर किसानों के साथ बैठकर आवश्यक डाक्युमेंट इकट्ठा कराकर एमपी आनलाईन के माध्यम से मुहल्ले, गांव और पंचायत मे लोगों को ले जाकर आवेदन भरवाया। समिति के माध्यम से घर पहुंच सर्विस की सेवा भी उपलबध कराई गई, सभी पात्र हितग्राही सेवा का लाभ उठा रहे है। दावा फार्म भरवाने के पूर्व ही समिति कार्यकर्ताओ ने तैयारी कर रखी थी जिससे आनलाईन आवेदन भरने मे कोई समस्या न हो, पात्र हितग्राही अपने दस्तावेज के साथ पहुंचकर दावा फार्म भरवाया।

मनरेगा : योजना के तहत कार्यक्षेत्र के **30 गांवों में नए जॉब कार्ड हेतु आवेदन दाखिल करवाया। मनरेगा के तहत काम पाने के लिए जॉब कार्ड सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान मानव जीवन विकास समिति की टीम** द्वारा **कुल** 156 **नए जॉब कार्ड बनाए। जॉब कार्ड बनाने के लिए सबसे पहले वीडीसी और एसएचजी** सदस्य **के सहयोग से उन पात्र परिवारों का चयन किया गया जिनके जॉब कार्ड नहीं बने थे और फिर उनके आवेदन भरने में उनकी मदद की गई और उन्हें ग्राम पंचायत में जमा करवाया गया।** जॉब कार्ड बनने के बाद आवश्यकता वाले मजदूरों का काम की मांग हेतु आवेदन भी दिलाया गया। आवेदन के बाद लोगों को मनरेगा मे काम मिला।

विविध प्रकार की योजना और हक व अधिकार : अपने हक और अधिकार को पाने के लिए प्रत्येक मानव जीवन प्रयत्नशील है।

''शासकीय योजनाओं तक पहुंच''

हर खेत को पानी" प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना"

मानव जीवन विकास समिति किसानों को प्राकृतिक व जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। इसके लिए कम पानी मे अच्छी फसल उत्पादकता हो और गैर कीटनाशी प्रबंधन को बढ़ावा मिले लगातार जागरूक किया जा रहा है। फसलों को समय समय पर पानी दिया जाये और जितना फसलों को पानी की जरूरत हो उतना ही दिया जाये स्प्रिंकलर पाईप से खेत की सिंचाई करें तो बेहतर होगा। किसानों को जागरूक करते हुये कृषि विभाग के पोर्टल पर आनलाईन आवेदन करने कार्यकर्ताओं की मदद से पूरा कराया जा रहा है। पोर्टल पर दर्ज आवेदन लॉटरी सिस्टम से चयनित होकर योजना से लाभ प्राप्त कर रहे है।
कटनी जिले के ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के कुदरा गांव निवासी मुल्लू सिंह को समिति के प्रयास से 50 सिंचाई पाईप उपलब्ध कराये गये। मुल्लू सिंह का मानना है कि मानव जीवन विकास समिति के प्रयास से यह काम सफल हो पाया है।

स्प्रे पम्प योजना :

कृषि विभाग के आत्मा योजनान्तर्गत दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 15 किसान और जबेरा ब्लॉक के 4 किसान को तथा कटनी जिले के ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 1 किसान को स्प्रे पम्प दिलाया गया। स्प्रे पम्प की मदद से किसान आसानी से जैविक दवाईयों का छिड़काव कर सकेगा। मानव जीवन विकास समिति हमेशा से किसानो के हित मे काम किया है। किसानों के स्थायी आजीविका सुनिश्चित कराने लगातार प्रयासरत है।

कृषि विभाग से किसानों को निःशुल्क बीज वितरण:

मानव जीवन विकास समिति के प्रयासों किसानों को सरकारी योजना का अनुदान प्राप्त हो रहा है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति मे सुधार हो रहा है। सरकारी योजना से लाभान्वित किसान आजीविका को बढ़ाने कोई कसर बांकी नही रख रहा है। किसानों को बीज व खाद तो मिला ही है।
अभी नवम्बर महीने मे कटनी जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 167 किसानों को 50 क्विंटल चना, 28 किसानों को 8.5 क्विंटल मसूर, 38 किसानों को 38 कि.ग्रा. सरसो, 5 किसानों को 1.5 क्विंटल गेहूं का बीज, 16 किसानों को 80 कि.ग्रा. मटर का बीज दिलाया गया है।

बायोगैस संयंत्र की स्थापना:

कृषि विभाग के सहयोग से, तेंदूखेड़ा के तीन किसानों को बायोगैस कार्यक्रम के तहत बायोगैस संयंत्र स्थापित करने 80% सब्सिडी प्राप्त हुई।
स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन, प्रकाश व्यवस्था, उपयोगकर्ताओं की थर्मल और छोटी बिजली की जरूरतों को पूरा करने के लिए जिसके परिणामस्वरूप स्वच्छता में सुधार, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण रोजगार का सृजन होता है। जैविक समृद्ध जैव-खाद के उत्पादन के लिए बायोगैस संयंत्रों से पचा हुआ घोल, जो खाद का एक समृद्ध स्रोत है, किसानों को रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को पूरा करने या कम करने में लाभान्वित करेगा ।

आटा चक्की लगाकर किसान बना आत्मनिर्भर

मानव जीवन विकास समिति के प्रयासों कटनी जिले के ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के सारनपुर गांव के किसान अजयकांत मेहरा को उद्यानिकी विभाग से आटा चक्की प्राप्त हुआ। अब किसान को खुशी है कि मुझे अपने घर पर ही रोजगार मिल जायेगा इससे महीने मे लगभग 3000 से 4000 रूपये तक की आमदनी अर्जित कर रहा है। अजयकांत मेहरा का पूरा परिवार अब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति इस छोटे से उद्योग स्थापित करने से पूरा करेगा। यह की अब अजयकांत को काम की तलास मे घर से बाहर नही जाना पड़ेगा इसी के साथ साथ खेतीबाड़ी का भी काम कर लेता है।

''प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम''

कौशल विकास को यदि हम समझे तो इसमे हमें ना सिर्फ किताबी ज्ञान मिलता है, बल्कि कुछ नया करने का हुनर भी मिलता है। जो आगे चलकर रोजगार का साधन बनता है। इसके हम गांव गांव सर्वे कराकर देखते है कि से कितने युवक, युवतिया और महिला, पुरूष व समूह, संगठन है जिन्हें कुछ नया करने का विचार हो रहा है। आवश्यकता वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमतावर्द्धन कराया जाता है ताकि कुछ नया करने का हुनर सीख जाये।

समिति अपने परियोजनाओं की मदद से स्वयं सहायता समूह का प्रशिक्षण, ग्राम विकास संगठन का प्रशिक्षण, किसानों का प्रशिक्षण, किसानों का एक्सपोजर विजिट, सरकारी योजनाओं का प्रशिक्षण, बकरी पालन प्रशिक्षण, मुर्गी पालन प्रशिक्षण, मछली पालन प्रशिक्षण, स्थानीय लोगों को दिया जाता हैं। इस प्रशिक्षण से प्रशिक्षित होकर अधिकतर लोगों ने स्वयं का रोजगार भी स्थापित कर लिया है। परिवार की आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ है। परिवार की वार्षिक आमदनी मे लगभग 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी भी हुई है। इस प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों के जीवन मे परिवर्तन देखने को मिला है।

प्राकृतिक खेती किसान पाठशाला सह–प्रशिक्षण

मानव जीवन विकास समिति, प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों का प्राकृतिक खेती किसान पाठशाला सह प्रशिक्षण का आयोजन कर किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्राकृतिक खेती की बारीकियों से किसानों को रूबरू कर प्राकृतिक खेती कर रहे 1500 किसानों को आगे बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहे है।

वर्तमान में रासायनिक खाद व दवाइयों के प्रयोग से खेती पर बढ़ते दुष्प्रभाव को कम करने के लिए प्राकृतिक खेती की आवश्यकता पड़ी। जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे भूमि जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगे। टिकाऊ कृषि के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया जिसमें परिवार सक्रिय रूप से प्राकृतिक खेती और एनपीएम-आधारित कृषि पद्धतियों में लगे हुए हैं। इनमें से किसानों ने एक समूह सर्टिफिकेट प्रक्रिया में भाग लिया जिसका उद्देश्य प्राकृतिक खेती मानकों और एनपीएम मानकों के पालन को मान्य करना।

कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से तेंदूखेड़ा ब्लॉक के 17 गांवों में 489 किसानों के लिए प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए। इन सत्रों का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करना और टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर जोर देना था।

प्राकृतिक खेती का महत्व

- भूमि की उर्वरा शक्ति मे वृद्धि।
- कम लागत, अधिक उत्पादन। प्रदूषण रहित उत्पादन।
- गुणवत्ता युक्त पैदावार। स्वास्थ्य के लिए लाभकारी।
- रासायनिक खाद व बीज पर निर्भरता मे कमी।
- जलधारण क्षमता मे बढ़ोत्तरी। मृदा संरक्षण होगा।
- बाजार मे जैविक उत्पाद की मांग मे वृद्धि।
- किसानों की आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा।
- जल भूमि वायु तथा वातावरण को प्रदूषण से बचाये रखने के लिए प्राकृतिक खेती उपयोगी होगी।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

हम पिछले कई वर्षों से रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग फसलों पर करते आ रहे है। जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति खत्म हो चुकी है एवं भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे है जो किसानो के लिए काफी नुकसानदायक है।

रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण प्रतिदिन बढ़ रहा है।

किसानों की फसल पैदावार से कमाई का आधा हिस्सा रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक खरीदने में चला जाता है तथा रासायनिक कीटनाशक काफी महंगे होते है।

प्राकृतिक खेती पर आयोजित जिला स्तरीय बैठक

दमोह के कृषि विज्ञान केंद्र में प्राकृतिक खेती पर एक जिला स्तरीय कार्यक्रम की। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के लाभों और तकनीकों के बारे में शिक्षित करना है। इसमें केवीके वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित सूचनात्मक सत्र जैविक खेती के तरीकों का व्यावहारिक प्रदर्शन और टिकाऊ कृषि पर चर्चा शामिल थी। कार्यक्रम में 50 किसानों को जैविक खेती की ओर बढ़ने और क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और संसाधन भी प्रदान किए।

प्राकृतिक खेती के विभिन्न पहलुओं के बारे में शिक्षित करना और बड़ी संख्या में किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। खेती के तरीके .प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को खेती में प्राकृतिक तत्वों का सही उपयोग सिखाया गया। किसानों के साथ संपर्क को बढ़ावा देना और प्राकृतिक खेती के लिए सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना। क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना। जैव-संसाधन केंद्र बीआरसी की स्थापना का अवलोकन किया गया । प्रशिक्षण का समग्र परिणाम सकारात्मक रहा, प्रतिभागियों ने इसके लिए कड़ी सराहना व्यक्त की। खाद्य सुरक्षा और आजीविका में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया।

किसान कार्यशाला एवं बीज मेला का आयोजन

एमजेवीएस द्वारा दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के समदई गांव में किसान कार्यशाला एवं बीज मेला कार्यक्रम का आयोजन किया गया .बीज मेले में लगभग 50 गांवों ने भाग लिया आरआरए नेटवर्क के प्रतिनिधि और संगठन टीम भी मौजूद थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक बीजों को लुप्त होने से बचाना और उनकी उपलब्धता बढ़ाने के लिए उन्हें खेती में फिर से शामिल करना था। किसान विभिन्न प्रकार के बीजों का जश्न मनाने और उन्हें अच्छी तरह से उगाने का जश्न मनाने के लिए एक साथ आए। प्रदर्शन पर बीजों के बहुत सारे स्टॉल थे और किसान उत्साहपूर्वक बात कर रहे थे कि उन्हें कौन सा बीज सबसे अधिक पसंद है। उन्होंने खेती के बारे में कहानियाँ और सुझाव भी साझा किए। वहां विशेषज्ञ भी थे जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना फसलें उगाने के बारे में नई चीजें सिखा रहे थे.

बीज मेले मे निम्न वस्तुओं का लगी प्रदर्शनी : धान, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूर, मूंग, मटर, चना, सरसो, अलसी, अरहर, उड़द, सोसाबीन, तिली, राई और सब्जियों के बीज मे अदरक, हल्दी, लहसुन, मिर्ची, धनिया, बैगन, गोभी, मूली, गाजर, प्याज, टमाटर, लौकी, सेमी, बरबटी, भिण्डी, कद्दू, तुरई, पालक, मेथी, लाल भाजी आदि विभिन्न प्रकार के बीज बीजोत्सव मेला कार्यक्रम मे रखा गया है।

कार्यक्रम का उद्धेश्य: रवि, खरीफ और जायद की फसलों के बीज को देशी तरीके से सुरक्षित बचाकर संरक्षित कर रखना है और बीज शोधन के माध्यम से बीजोपचार कर उपयोग करना है। हाईब्रिड बीज का उपयोग बिल्कुल नही करें, हाईब्रिड बीज खरीदने से लागत बढ़ती है। देशी बीज के उपयोग से लागत मे कमी आती है और उत्पादकता मे बढ़ोत्तरी होती है।

किसानों का मानना है कि आज के बढ़ते रासायनिक खाद बीज के दौर ने किसानों को तबाह कर दिया है। भूमि की उर्वरक क्षमता दिनो दिन घटती चली जा रही है और किसान बाजार पर निर्भर होते जा रहा है। रासायनिक खाद व बीज के उपयोग से भूमि के साथ साथ मानव स्वास्थ पर भी दुष्प्रभाव बढ़ता जा रहा है। दुष्परिणामों को खत्म करने के लिए जैविक व प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाना होगा। बीज मेला कार्यक्रम मे उपस्थित प्रतिभागियो का मानना है कि जैविक व प्राकृतिक खेती करना आज की जरूरत ही नही आवश्यकता भी है इसे बढ़ाना होगा। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञो द्वारा खेती करने के नये नये तरीके बताये गये।

दमोह में किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग ने मिलेट वन विकास समिति के समर्थन एवं सहयोग से क्षेत्र के 73 किसानों ने मेले में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम ने किसानों को मिलेट की खेती के लाभों और तकनीकों के बारे में जानने क्षेत्र में कृषि विकास और विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया।

रवि फसल पूर्व कार्यशाला सह–प्रशिक्षण

एमपीएनसीएनएफ पार्टनर भागीदारों के लिए रवि फसल पूर्व कार्यशाला और प्रशिक्षण का आयोजन 4 से 7 नवंबर 2023 को मानव जीवन विकास समिति कटनी मे आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्यतः MJVS, WOTR, GSS, SRIJAN, Haritika, PRADAN, PSI, CARD, NIWCYD, N+3, VSS संस्था से 50 प्रतिभगियों ने प्रशिक्षण प्राप्त की है।

कार्यक्रम का उद्देश्य मुख्यतः

- खरीफ फसल कटाई के बाद की तकनीकों के बारे में जानें।
- प्रत्येक भागीदार की आगे की रणनीतियों को परिष्कृत करना।
- एनसीएनएफ के समग्र लक्ष्यों परिणामों और प्रस्तावित रणनीतियों के साथ संरेखित करना।
- फसल-विशिष्ट इनपुट सहित फसल-आधारित प्रथाओं के सामान्य पैकेज पर प्रशिक्षण
- साक्ष्य सृजन के लिए दस्तावेज़ीकरण और रिकॉर्ड रखना एमआईएस और फार्म डायरी डेटा संग्रह।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर आयोजित क्षमतावर्द्धन कार्यशाला

मानव जीवन विकास समिति ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर परियोजना साथियों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया है जहां सीखा गया कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों और हमारे आसपास पाए जाने वाले उत्पादों का उपयोग करके गांव की अर्थव्यवस्था को कैसे बेहतर बना सकते हैं। अपनी मूलभूत वस्तुओं का उत्पादन करकेए हम अपनी दैनिक बुनियादी जरूरतों की पूर्ति सुनिश्चित करते हुए एक स्थायी आजीविका स्थापित कर सकते हैं। इससे गांव की अर्थव्यवस्था स्थानीय बनी रहेगी और बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा। यह अहसास कि गाँव में पर्याप्त मात्रा में धन है लेकिन हम इसका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में असमर्थ हैं हमारी गाँव की अर्थव्यवस्था की कमजोर स्थिति को दर्शाता है। इसलिए हमारे स्थानीय संसाधनों और उत्पादन को हमारे गांव के प्राकृतिक संसाधनों के साथ संरेखित करने से हमारी स्थायी आजीविका में सुधार हो सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भोपाल से प्रदीप घोष विजय भारती एवं 29 एमजेवीएस स्टाफ ने भाग लिया।

संस्था सदस्यों का क्षमतावर्द्धन

मानव जीवन विकास समिति बिजौरी मे म.प्र. जन अभियान परिषद जिला कटनी की सभी चिन्हित नवान्कुर संस्था सदस्यों की बैठक आयोजित की गई। बैठक मे 38 प्रतिभागियो ने भाग लेकर जिला समन्वयक एवं ब्लॉक समन्वयक के साथ मिलकर अपनी प्रोग्रेस रिपोर्ट पर चर्चा किया और तिमाही प्रतिवेदन जमा कर समीक्षा किया।

मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत वंदन करते हुए संस्था की लीगल रजिस्ट्रेशन व दस्तावेजीकरण पर प्रकाश डाले। संस्था का पंजीयन सोसायटी एक्ट के तहत हो जाने के बाद एन.जी.ओ. दर्पण, 80 जी, 12 ए रजिस्ट्रेशन के साथ साथ धारा 27 व धारा 28 की रिपोर्ट जमा करने समय अवधि पर लोगों को विस्तृत जानकारी से रूबरू करार्या मानव जीवन विकास समिति व एकता परिषद के संस्थापक डॉ. राजागोपाल पी.व्ही. (राजा जी) को भी म.प्र. जन अभियान परिषद् टीम सहज आमंत्रित कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। राजा जी ने संदेश दिये की जन अभियान परिषद लोगों बनाया गया एक जनाभियान है जो यह लोगों के साथ मिलकर एक अभियान के तौर पर चलाया जा रहा है। गांव गांव और घर घर तक पहुंचकर लोगों को जागरूक करने के अभियान को सफल बनाया जा रहा है। इस कार्य मे लगे पूरी टीम को बधाई।

वन अधिकार समिति सदस्यों का क्षमतावर्द्धन

कटनी जिले के ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के अलग अलग गांव मे वन अधिकार समिति सदस्यों के साथ **22 बैठक किया गया जिसमे 440 समिति सदस्यों की भागीदारी रही है।** समिति सदस्य बहुत ही सक्रीयता से अपने अधिकारों को पाने के लिए उत्सुक है। जानकारी के अभाव मे किसान अपने अधिकारों से वंचित है। कटनी जिले का ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक आदिवासी बाहुल्य है यहां पर अधिकांश जनजातियां वनो पर आधारित है। इसके अलावा जंगल की भूमि को कब्जा कर पेड़ पौधे के बिना नुकसान पहुचाये कृषि कार्य मे भी लगे हुये है। कृषि मे देखा जाये तो सिंचाई का साधन न होने से एक फसली फसल का उत्पादन ही कर पा रहे है। किसानों का मानना है कि काबिज भूमि का यदि अधिकार पत्र मिल जाये तो अच्छा होगा ताकि हम किसान बिना दबाव के काबिज भूमि पर स्वतंत्रता से खेती कर सके।

जमीन का अधिकार पत्र किसान के पास नही होने से जंगल विभाग के अधिकारी आये दिन परेशान करते रहते है। इसी कारण स्थायी रूप से किसान कब्जा होने के बाद भी खेती नही कर पाता है। मानव जीवन विकास समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से वन अधिकार अधिनियम की जानकारी किसानों को दिया है। वन अधिकार समिति के साथ मिलकर किसानों की समस्याओं पर काम करना है समिति को सक्रीय करना है, बैठक कर वन अधिकार से सम्बंधित समस्याओं का प्रस्ताव पारित विभाग को जानकारी देना और समस्या समाधान कराने की पहल करना। यह भी तय किया गया की जो भी किसान 13 दिसम्बर 2005 के पहले से वन भूमि पर काबिज है उसे साक्ष्य के आधार पर अधिकार पत्र दिलाने की कार्यवाही की जाये। सरकार के एमपी वन एप्प मित्र पोर्टल पर कम्पलीट डाक्युमेंट के साथ आनलाईन आवेदन कराया जायेगा ताकि काबिजों को वन भूमि का अधिकार पत्र मिल सके।

ग्राम स्तरीय इंटरफ़ेस बैठक

मानव जीवन विकास समिति द्वारा आयोजित ग्राम स्तरीय इंटरफेस बैठक मे **दमोह जिले के तेंदूखेड़ा के** 50 **गांवों से कुल** 885 **पुरुष एवं** 382 **महिलाएं तथा जबेरा के** 25 **गांवों से कुल** 331 **पुरुष एवं** 507 **महिलाएं शामिल हुई** बैठक के दौरान चर्चा किया गया कि गांव मे मूलभूत सुविधा क्या है और समिति को क्या काम करने की जरूरत है। अधिकांशतः परिवार कृषि और मजदूरी पर आश्रित है गांव मे पानी, बिजली और सड़क जैसे समस्या भी देखने को मिली है। मूलभूत सुविधाओं और समस्याओं की योजना तैयार कर पंचवर्षीय योजना मे जुड़वाने का भी काम किया जा रहा है। सरकार की योजनाओं से जोड़कर और कुछ काम श्रमदान के माध्यम से पूरा किया जा रहा है।

महिला समूह के साथ बैठक

मानव जीवन विकास समिति, अपने कार्यक्षेत्र के 150 गांव के 750 महिला समूह के साथ स्थायी कृषि, स्थायी आजीविका और स्वरोजगार को बढ़ावा देने लगातार समूह के साथ बैठक आयोजित कर आगे बढ़ाने का काम किया जा रहा है। समूह को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के साथ जोड़कर स्वयं का रोजगार स्थापित करने लोन की मदद कराई जा रही है। समूह सदस्य जागरूक होकर अलग अलग प्रकार के व्यवसाय स्थापित कर आत्मनिर्भर बन रहे है। किसी ने किराना व्यवसाय, तो किसी ने जनरल (मनिहारी) व्यवसाय और गौ–पालन की ओर भी आगे बढ़ रहे है। गौ–पालन से देखा जाये तो गौमूत्र और गोबर से विभिन्न प्रकार के खाद एवं दवाईयां बनाई जा रही है। समूह को नाबार्ड के सहयोग से जैविक खाद एवं दवाईयां बनाने के लिए प्रशिक्षण भी कराया गया है। तैयार सामग्री को बड़े बाजार भी उपलब्ध कराने मदद किया जा रहा है।

ग्राम नेताओं का प्रशिक्षण

दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक की 18 ग्राम पंचायतों और जबेरा ब्लॉक की 7 ग्राम पंचायतों मे ग्राम नेताओं के साथ प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण मे तेन्दुखेड़ा ब्लाक की कुल 379 पुरूष और 90 महिला एवं जबेरा से 156 पुरूष और 65 महिलाएं एवं कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक की 16 ग्राम पंचायतों मे ग्राम नेतओं का प्रशिक्षण किया गया जिसमे कुल 416 प्रतिभागी प्रशिक्षित हुये।

ग्राम नेताओं का प्रशिक्षण की आवश्यकता इसलिए पड़ी ताकि गांव के जागरूक नेताओं की मदद से गांव का विकास हो सके। ग्रामसभा के माध्यम से ग्राम विकास योजना बनाई जाती है इसे जीपीडीपी मे शामिल कर ग्रामसभा के माध्यम से अनुमोदित कराकर गांव मे पंचायत के द्वारा काम कराया जाता है। पंचायत स्तर पर पांच वर्षीय जीपीडीपी बनाकर उसे प्रत्येक वर्ष के हिसाब से अलग अलग वर्ष मे क्या काम कराया जाना है यह सभी दर्शाया जाता है यह बात स्पष्ट है कि जीपीडीपी के बारे मे कुछ ही लोगों को पता है और इस पर बहुत ही कम एक्शन लिया जाता है क्योंकि सभी को जानकारी ही नही होती है।

ग्राम नेताओं मे जनप्रतिनिधि, ग्राम विकास समिति सदस्य, स्व–सहायता समूह सदस्य एवं गांव के जागरूक नेताओं को शामिल किया गया है। ये सभी नेता प्रशिक्षित होकर ग्राम विकास मे सहयोग करेंगे। ग्राम नेता प्रशिक्षण मे तय किया गया कि भूमिधारी किसान को भूमि डवलपमेंट की स्क्रीम से जोड़ा जाये और जैविक खेती की ओर मोड़ा जाये। दूसरा यह कि भूमिहीन किसानों के साथ सरकार की अन्य जन कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाये जैसे मनरेगा योजना, पशुपालन विभाग से बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं मत्स्य विभाग से मछली पालन को बढ़ावा दिया जाये।

ब्लॉक स्तरीय बैठक

तेंदूखेड़ा और जबेरा ब्लॉक में दो ब्लॉक-स्तरीय वकालत बैठकें आयोजित की गईं जिनमें सरकारी अधिकारी स्थानीय अधिकारी और समुदाय के सदस्य शामिल थे। इन बैठकों में पशुपालन विभाग कृषि विभाग ग्राम पंचायत जन अभियान परिषद एनआरएलएम और संगठन टीम के प्रतिनिधियों सहित दोनों ब्लॉकों के विभिन्न हितधारकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन बैठकों का उद्देश्य दोनों ब्लॉकों में समुदायों से संबंधित विभिन्न विकासात्मक पहलों और मुद्दों पर चर्चा करना और उनकी वकालत करना था।

सरकारी विभागों के साथ जिला स्तरीय एडवोकेसी मीटिंग

कटनी जिला मुख्यालय मे बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के कार्यकर्ता के साथ मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह के मार्गदर्शन मे प्रोजेक्ट समन्वयक एवं ब्लॉक समन्वयक और जिला प्रशासन की उपस्थिति मे सम्पन्न कराया गया। कार्यक्रम मे 20 कार्यकर्ता एवं 10 जिला प्रशासन अधिकारी की भागीदारी रही है।

समिति का मानना है कि किसानों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित हो इसके लिए नये नये प्रयास किये जा रहे है। प्राकृतिक व जैविक खेती के साथ व्यवसाय को बढ़ावा देना।

कार्यक्रम मे नाबार्ड, महिला एवं बाल विकास विभाग, पशुपालन विभाग, उद्योग विभाग, आयुष विभाग, उद्यानिकी विभाग एवं पुलिस विभाग से अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लेकर समिति कार्यकर्ताओं को सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और हितग्राहियों की आवश्यक मदद पहुंचाने का आश्वासन दिया। बताया गया की योजनाओं की जानकारी लोगों को नही होने से योजना जस की तस रखी रह जाती है इसलिए लोगों को जागरूक होना आवश्यक है। योजनाओं का लाभ आवश्यकता वाले हितग्राही को मिले इसके लिए समिति और विभाग मिलकर काम को बढ़ावा दे रही है। नाबार्ड के सहयोग से समूहों को लोन सुविधा का लाभ दिला कर नव व्यवसाय से जोड़ा जा रहा है। पशुपालन विभाग के सहयोग से मुर्गी पालन और बकरी पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। उद्योग विभाग से जानकारी मिली है की आप उद्योग स्थापित करने हेतु विभाग से सम्पर्क करे आपकी मदद की जायेगी।

स्थायी कृषि को बढ़ावा देने परियोजना टीम का क्षमता निर्माण

स्थायी कृषि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से टीम का जागरूक होना जरूरी है, तभी वे किसानों को इसके बारे में जागरूक कर पाएंगे। हम देख रहे हैं कि दिन-प्रतिदिन किसानों की बाजार पर निर्भरता बढ़ती जा रही है और खेती की लागत बढ़ती जा रही है। इन समस्याओं के समाधान के लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना जरूरी है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मानव जीवन विकास समिति ने परियोजना टीम के लिए दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान हमने निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की। प्राकृतिक खेती की अवधारणा। • फसल चयन और अंतर फसल। • लाइन शोइंग और बॉर्डर फसल। • मिट्टी परीक्षण। • बीज उपचार प्रक्रिया। • कीट नियंत्रण प्रबंधन। • पोषक तत्व प्रबंधन। • वर्मि कम्पोस्ट, भू नाडेप, नाडेप, सुपर कम्पोस्ट, हरित उर्वरक जैसे जैविक खाद तैयार करना। • मठास्त्र, अग्निस्त्र, बृह्मस्त्र, जीवामृत, दसपर्णी, घन जीवामृत, नीमास्त्र आदि जैसे जैविक कीटनाशक तैयार करना। • बफरजोन का रखरखाव • भंडारण तकनीक।

आउटपुट: सभी टीम सदस्यों को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और इसकी तकनीकों के बारे में जानकारी मिली। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान हमने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों के लिए गांव स्तर पर कई प्रशिक्षण आयोजित किए और इन प्रशिक्षणों और टीम के समर्थन के परिणामस्वरूप, 574 किसानों ने प्राकृतिक खेती का अभ्यास करना शुरू कर दिया।

व्यावसायिक स्तर पर सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण

महिला कृषकों को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से व्यावसायिक स्तर पर सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र प्रदर्शन।

यह की महिलाएं कृषि कार्य को बेहतर समझती हैं तथा अधिक रूचि के साथ कार्य करती हैं। हमने देखा है कि ग्राम स्तर की बैठकों में भी महिलाएं अधिक भागीदारी करती हैं। बड़े पैमाने पर किचन गार्डन एवं सब्जी उत्पादन किसी भी परिवार के लिए आय का स्रोत हो सकता है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए परियोजना के अंतर्गत 250 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को व्यावसायिक स्तर पर किचन गार्डन एवं सब्जी की खेती का प्रशिक्षण दिया गया तथा सभी महिलाओं को फसल प्रदर्शन के लिए 11 प्रकार की सब्जियों के बीज भी उपलब्ध कराए गए।

आउटपुट: 250 स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों ने किचन गार्डन एवं व्यावसायिक स्तर पर सब्जी की खेती को अपनाया।

परियोजना टीम का चयन और अभिमुखीकरण:

किसी भी परियोजना के लिए एक अच्छी टीम का होना बहुत जरूरी है तभी हम परियोजना की गतिविधियों को बेहतर तरीके से कर सकते हैं और लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। परियोजना की शुरुआत में सबसे पहले हमने परियोजना टीम का चयन किया जिसमें परियोजना क्षेत्र के विभिन्न गांवों से कई प्रतिभागियों ने भाग लिया। टीम का चयन संगठन के नियमों के आधार पर किया गया जिसमें लिखित परीक्षा और साक्षात्कार शामिल थे। परियोजना टीम के अंतिम चयन के बाद परियोजना के बारे में टीम की क्षमता बढ़ाई गई कि परियोजना क्या है उद्देश्य क्या है क्या गतिविधियाँ की जानी हैं और लक्ष्य क्या है आदि।

आउटपुट: सभी टीम सदस्यों को परियोजना की गतिविधियों आउटपुट लक्षित समुदायों और परियोजना के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई।

30 गांवों में ग्राम विकास समिति (वीडीसी) के गठन में सुविधा: किसी भी गांव के समग्र विकास के लिए ग्राम स्तरीय संगठन का होना बहुत जरूरी है। रिपोर्टिंग के दौरान हमने 30 परियोजना गांवों में 30 वीडीसी का गठन किया है। सबसे पहले टीम के सदस्यों ने किसानों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया और उन्हें वीडीसी के गठन के लिए एकजुट किया। एक वीडीसी के गठन के लिए हमने 4-5 बैठकें कीं फिर गठन की प्रक्रिया पूरी हुई। मानव जीवन विकास समिति की टीम ने वीडीसी के गठन और संचालन के लिए समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान किया है। वीडीसी के गठन के बाद अधिकांश परियोजना गतिविधियाँ आसानी से हो रही हैं क्योंकि वीडीसी के समर्थन से हम किसी भी संदेश को अधिक लोगों तक आसानी से पहुँचा सकते हैं।

आउटपुट: 30 ग्राम विकास समितियों का गठन और सुदृढ़ीकरण किया गया है।

ग्राम सूक्ष्म नियोजन और मनरेगा के बारे में परियोजना टीम की क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन:

जब हम किसी भी क्षेत्र में काम करने जाते हैंए तो हमें उन विषयों के बारे में जानकारी होना बहुत जरूरी है जिनके बारे में हमें लोगों को जानकारी देनी है तभी हम उस व्यक्ति को सही जानकारी दे पाएंगे। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मानव जीवन विकास समिति ने परियोजना टीम के लिए वन अधिकार अधिनियमए सरकारी योजनाओं और मनरेगा पर 2 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। वन अधिकार अधिनियमए सरकारी योजनाओं और मनरेगा पर दो दिवसीय कार्यशाला के दौरान हमने निम्नलिखित बिंदुओं को कवर किया।

· वन अधिकार अधिनियम के बारे में। · व्यक्तिगत वन अधिकार। · सामुदायिक वन अधिकार। · वन अधिकार समिति के गठन की प्रक्रिया। · एफआरसी की भूमिका और जिम्मेदारियां। · एमपी वन मित्र पोर्टल और इसकी प्रक्रिया। · मनरेगा के बारे में। · जॉब कार्ड बनाने की प्रक्रिया।· मेट की भूमिका और जिम्मेदारियाँ। · काम की मांग के लिए ग्राम पंचायत में आवेदन प्रस्तुत करना। · मनरेगा में ग्राम सभा और ग्राम पंचायत की क्या भूमिका है

· वृद्धावस्था पेंशन विधवा पेंशन विकलांगता पेंशन प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना जीवन ज्योति बीमा योजना किसान सम्मान निधि फसल बीमा योजना पीएम उज्ज्वला योजना पीएम आयुष्मान किसान केडिट कार्ड कृषि विभाग की योजनाएँ बागवानी विभाग की योजनाएँ और पशु चिकित्सा विभाग की योजनाओं जैसी सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी।

आउटपुट: सभी टीम सदस्यों को एफआरए मनरेगा और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी मिली।

ग्रामीण सहभागी आंकलन : ग्रामीण सहभागी आकलन का मतलब हो सकता है कि आप ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सहयोग करने के लिए एक आकलन योजना या प्रक्रिया की बात कर रहे हैं। यह आमतौर पर गांवों या ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सरकारी योजनाओंए गैर सरकारी संगठनों या अन्य सामाजिक संगठनों द्वारा किए जाने वाले कामों को आकलन करने के लिए उपयोग होता है। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देना होता है ताकि वहां के लोगों को बेहतर जीवन की सुविधाएँ मिल सकें।

कटनी जिले के ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 10 गांव में ग्रामीणों के साथ मिलकर PRA की गतिविधि आयोजित की गई कार्यक्रम में 500 से ज्यादा ग्रामीणों की भागीदारी रही है।

सहभागी आकलन एक प्रक्रिया है जो ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए सहयोग करने के लिए अनुभवोंए ज्ञानए और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देती है।

इसमें 3 सेक्शन्स शामिल हैं – **सरकार: गैर सरकारी संगठन : स्थानीय समुदाय:**

ग्रामीण सहभागी आकलन के उद्देश्य हैं:

1. **सामाजिक और आर्थिक विकास ।**
2. **सामाजिक समानता की बढ़ावा ।**
3. **स्वास्थ्य और पर्यावरण की सुरक्षा ।**

एक्सपोजर विजिटः ''जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय दमोह मे एक्सपोजर विजिट का आयोजन''

प्राकृतिक खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए किसान एक्सपोज़र विजिट का आयोजन किया गया।

.भ्रमण में तेंदूखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के 46 किसान शामिल थे।

आधुनिक कृषि तकनीकों और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जेएनकेवीवीए जबलपुर में किसानों की एक्सपोज़र यात्रा प्राकृतिक खेती तकनीकों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित हुई। इस यात्रा ने ज्ञान हस्तांतरण और कौशल विकास को सुविधाजनक बनाया जिससे किसानों को टिकाऊपन पद्धति अपनाने के लिए सशक्त बनाया गया। यात्रा के दौरान हासिल की गई नई जागरूकता और कौशल से इसे उत्प्रेरित करने की उम्मीद है। प्राकृतिक खेती और मिलेट खेती को अपनाना जिससे कृषि लचीलेपन में वृद्धि हुई और क्षेत्र में आजीविका में सुधार

महत्वपूर्ण बिंदु:

- किसानों को विभिन्न प्राकृतिक कृषि तकनीकों जैसे जैविक खादए मल्चिंग आदि से परिचित कराया गया ।
- व्यावहारिक प्रदर्शनों ने मिट्टी के स्वास्थ्य और कीटों को बढ़ाने के लिए इन तकनीकों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया।
- जेएनकेवीवी विशेषज्ञों ने मिलेट की खेती पर कार्यशालाएं आयोजित कीं जिसमें इसके पोषण मूल्य पर जोर दिया गया।
- किसानों को उपयुक्त मिलेट किस्मों इष्टतम खेती प्रथाओं और फसल के बाद की देखभाल के बारे में शिक्षित किया गया।
- किसानों ने कार्यान्वयन को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए जेएनकेवीवी परिसर के भीतर प्रदर्शन भूखंडों का दौरा किया
- अनुभवी किसानों और शोधकर्ताओं के साथ बातचीत से बहुमूल्य अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सुझाव मिले।
- किसानों ने सहकर्मी शिक्षण और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देते हुए अपने अनुभव और चुनौतियाँ साझा कीं।

''ग्रामीण पर्यटन''

रूरल टूरिज्म प्रोग्राम मानव जीवन विकास समिति ने फ्रान्स की संस्था तमादी के साथ मिलकर रूरल टूरिज्म (ग्रामीण पर्यटन) की अवधारणा के अनुसार एक सामाजिक और सांस्कृतिक अदान–प्रदान की गतिविधियों का संचालन कर रही है। गांव के समूह कल्चरर एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत तमादी द्वारा भेजे जा रहे मेहमानों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था में सहयोग करते है और जो पैसा लॉज व होटल मे रूकने पर खर्च होता था वह पैसा गांव के समूह को ही दिया जाता है जिससे समूह से जुड़े लोगो की आर्थिक स्थिति म सुधार हुआ है। इसी प्रोग्राम को देखते हुए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड भी समिति के साथ काम करने को तैयार हुआ है।

मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्डः— ग्रामीण पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड के सहयोग से कटनी, उमरिया, दमोह, बुधनी जिले के 6 गांवों को ग्रामीण पर्यटन के रूप मे विकसित करने का कार्य समिति कर रही है। इस कार्यक्रम मे समिति गांव मे होम स्टे डेवलपमेंट समिति बनाकर काम उन्ही के घर मे होम स्टे बनाने की प्रक्रिया मे आगे बढ़ रही है। आगे आने वाले समय मे पर्यटन भ्रमण कर रहे पर्यटक और इच्छुक व्यक्ति होम स्टे मे रूक सकेंगे। पर्यटक स्थान का चयन और गांव मे समूह का बैठक होना प्रारम्भ हो गया है जिसमे के लोगों की रूचि बढ़ रही है।

ग्रामीण पर्यटन को मिल रहा बढ़ावा

मानव जीवन विकास समिति पहले से ही फ्रांस की संस्था तमादी के साथ मिलकर ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने ग्रामीणों के घरो मे ही रूकवाना, लोकल गतिविधियों कसे रूबरू कराने का काम कर ही रही थी की मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड भोपाल के साथ भी जुड़कर काम करने का मौका समिति को मिला जिसके अन्तर्गत विभाग द्वारा ग्रामीणों को अपने घर पर ही होमस्टे डेवलप करने सुविधा मिल गई। मानव जीवन विकास समिति द्वारा मध्यप्रदेश ग्रामीण पर्यटन विभाग की मदद से होमस्टे डेवलप करने मध्यप्रदेश के कटनी, उमरिया, डिण्डौरी, दमोह और सीहोर जिले के 7 गांव मे 65 होमस्टे बनाने का काम किया जा रहा है। इससे ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

इसका उद्धेश्यः ग्रामीण क्षेत्र मे लोगों को अपने घर मे ही होमस्टे निर्माण कर ग्रामीण पर्यटक को सुविधा उपलब्ध कराना। होमस्टे निर्माण कार्य बहुत ही तेजी गति से चल रहा है। कही पर छत का कार्य तो कही पर दिवाल का कार्य चल रहा है। लोगों की रूचि बढ़ रही है काम तेजी से बढ़ रहा है जैसे ही निर्माण कार्य पूरा होगा अतिथियों का आगमन होमस्टे मे शुरू होगा। यह कार्य से गांव मे संभावनाये है की लोगों को अपने घर पर ही रोजगार के अलावा लोगों को होटल और लॉज जैसे सुविधा मुहैया करा सकते है। यहां पर रूकने वाले अतिथियों को प्राकृतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ लोकल आर्ट का भी आनंद मिलेगा।

स्थानीय कला का विकास

स्थानीय कला वास्तव मे विलुप्त होता चला जा रहा है ऐसे मे आने वाले समय मे स्थानीय कला का नामों निशान मिट जायेगा। समिति अपने स्तर पर स्थानीय कलां को बचाये रखने मे मदद कर रही है। इसमे मुख्य रूप से बांस के कलात्मक वस्तुओं का निर्माण कर उद्यम विकास कार्यक्रम को बढ़ावा दे रहे है।

इसके अलावा भी मिट्टी के बर्तन बनाना, पत्थर की वस्तु बनाना, लकड़ी की वस्तु बनाना आदि शामिल है। ऐसे कलाकारों को समिति के माध्यम से प्रतिभाशाली कलाकारों का ट्रेनिंग दिया जाता है इनके द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार उपलब्ध कराकर उचित पारिश्रमिक दिलाये जाने कार्य किया जा रहा है।

हस्तकला शिल्प

मानव जीवन विकास समिति द्वारा बांस हस्तकला शिल्प का प्रदर्शनी मे बांस से निर्मित विभिन्न कलात्मक वस्तुओं के सहारे बाजार की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी आय को भी 7500 से 15000 रूपये तक दोगुनी कर रहे है। बांस की अद्भुत कला से खिलौने, बाक्स, टोपी, डलिया, बाटल और ज्वेलरी के के भी सामान बनाये जा रहे है। बांस की वस्तुऐं बनाने के साथ हम समिति की मदद से बांस शिल्पकारों को प्रशिक्षित करने का भी काम कर रहे है। आने वाले समय मे ऐसे कलाकारों की संख्या और बढ़ेगी और हम अधिक मात्रा मे उत्पादो को दूर दूर तक ले जाकर बाजार मे उपलब्ध करा सकते है।

स्कालरशिप सपोर्ट

एजुकेशन सपोर्टः– इसके अन्तर्गत आर्थिक स्थिति से कमजोर परिवार के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए समिति द्वारा परिवार को सपोर्ट किया जाता है। ऐसे परिवार के बच्चों को सपोर्ट किया जाता है जो वास्तव मे शिक्षा प्राप्त करना चाहता है लेकिन माता पिता अपने बच्चों को शिक्षा के लिए मदद करने मे अश्मर्थ है **ऐसे 6 बच्चों को सपोर्ट किया गया है।**

रिस्क सपोर्टः– इसके अन्तर्गत सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के बच्चों को आर्थिक सपोर्ट करना समिति का निर्णय है जिससे स्वास्थ्य सुविधा मिल सके। यह की समिति से जुड़े कार्यकर्ता व उनके परिवार के अन्य सदस्य जब कभी लम्बी व गंभीर बीमारी से जूझ रहा होता है तो समिति अपने कमेटी से विचार विमर्श कर सपोर्ट करने का निर्णय लेती है। **ऐसे 16 लोगों की मदद की गई है।**

सुपोषण अभियान

मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त काम कर ही रही है। समिति ने बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लाक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनवाड़ीयों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। बड़वारा के ग्राम पंचायत भवन मे और ढ़ीमरखेड़ा के मंगल भवन मे कार्यक्रम आयोजित कर पोषण किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुपोषित बच्चे एवं माताऐं उपस्थित होकर पोषण आहार किट प्राप्त कर खुशी जाहिर की मात्रशक्तियों के चेहरे खुशी से भर गये।

बड़वारा मे आयोजित कार्यक्रम के समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा की हम पोषण आहार किट देने के बाद चुप नही बैठेंगे ऐसे सभी परिवार मे पोषण वाटिका लगवायेंगे ताकि पूरा परिवार स्वास्थ्य कार्यक्रम मे महिला बाल विकास विभाग अधिकारी सेक्टर प्रभारी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह समस्त समिति स्टाफ सहित अन्य समाजसेवियो की भागीदारी रही है।

मानव जीवन विकास समिति द्वारा कार्यक्षेत्र के 1500 किसानों के साथ मिलेट उत्पादन कराने किसानों को जागरूक कर रही है और किसानों को मिलेट के बीज उपलबध कराकर खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। कोदो, कुटकी और रागी के उत्पादन के लिए किसानों को चिन्हित कर प्रशिक्षित किया जा रहा है। यह भी तय किया गया है कि किसान द्वारा उत्पादित मिलेट को बड़े बाजारों मे पहचान दिलाई जाये। मिलेट प्रसंस्करण इकाई के माध्यम से उत्पादित कच्चे माल को प्रसंस्करण कर अच्छे कीमत पर बिक्री किया जायेगा।

मिलेट प्रसंस्करण इकाई की स्थापना

कटनी कलेक्टर महोदय की अनुसंशा मे कृषि विभाग के आत्मा परियोजना अन्तर्गत मिलेट प्रसंस्करण यूनिट की स्थापना भी समिति प्रांगण मे किया गया है इससे आसपास के हजारो किसानों को लाभ मिलेगा।

मिलेट आधारित पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने मिलेट प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की गई। खाद्य सुरक्षा पोषण और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने में मिलेट के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कलेक्टर ने इस पहल की सराहना की और स्थानीय किसानों को सशक्त बनाने तथा स्वस्थ खान-पान की आदतों को बढ़ावा देने और ग्रामीण आजीविका को बढ़ाने वाली तथा सतत विकास में योगदान देने, समर्थन करने के लिए प्रशासन की प्रतिबद्धता दोहराई।

जिला कलेक्टर द्वारा मिलेट यूनिट एवं इलेक्ट्रिक वेंडिंग कार्ट का उद्घाटन मानव जीवन विकास समिति द्वारा 10 मई को आयोजित किया गया। कृषि विभाग कटनी द्वारा आत्मा परियोजना के तहत मिलेट के बिजनेस प्लान के तहत एफ प्लांट को मिलेट मशीन यूनिट की आपूर्ति की जाती है और एनपीएम उत्पाद के प्रचार-प्रसार एवं विपणन एन+3एफ संस्था द्वारा इलेक्ट्रिक वेंडिंग कार्ट की आपूर्ति की जाती है। कोदो मिलेट के संगठन एवं विपणन उद्यम एमजे इलेक्ट्रॉनिक्स एवं एफ इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए यह सबसे अच्छा अवसर है। उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला रजिस्ट्रार श्री अनुविभागीय प्रसाद रहे उन्होंने यूनिट एवं इलेक्ट्रिक वेंडिंग कार्ट का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के अवसर पर सीईओ बड़वारा, डी.डी.एम. नाबार्ड, आत्मा के निदेशक, केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक, बड़वारा एवं ढीमरखेड़ा ब्लॉक के सचिव, सरपंच एवं ग्रामीणजन शामिल हुए।

सशक्त ग्रामसभा

लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण आयोजन माना जाता है इसके माध्यम से ग्राम पंचायत का विकास कार्य कराया जाता है। इसके लिए पंचवर्षीय योजना के तहत डीपीआर तैयार किया जाता है जिसमे से प्रत्येक वर्ष के लिए वार्षिक कार्ययोजना तय किया जाकर ग्रामसभा के माध्यम से प्रस्ताव पारित कर कार्य कराये जाते है। इसके लिए समिति अपने साथियों की मदद से गांव गांव मे ग्रामसभा जागरूकता कार्यक्रम चलाकर लोगों को अधिक से अधिक ग्रामसभा मे जाने के लिए प्रेरित किया गया है।

जागरूकता कार्यक्रम का असर सभी ग्रामसभा मे देखने को मिला है। ग्रामसभा मे लोगों की भागीदारी 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ी है और सभी ने अपनी समस्या का प्रस्ताव भी ग्रामसभा मे रखा है। ग्रामसभा प्रस्ताव का अनुमोदन भी उपस्थिति ग्रामसभा सदस्यों के द्वारा कराया गया है।

- कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक के 39 गांव मे एवं ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 14 गांव मे समिति कार्यकर्ता और ग्राम विकास समिति सदस्य एवं स्व सहायता समूह की महिला सहित ग्रामसभा सदस्यों की अच्छी भागीदारी रही।
- ग्रामसभा मे अच्छा माहौल देखने को मिला, लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और समस्याओं के प्रस्ताव रखे।
- बड़वारा ब्लॉक के गांव मे 465 आवेदन ग्रामसभा मे अलग अलग समस्या के प्रस्ताव रखे गये।
- ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के गांव मे 168 आवेदन ग्रामसभा मे अलग अलग समस्या के प्रस्ताव रखे गये।

विकसित भारत संकल्प यात्रा

कटनी जिले के बड़वारा और ढ़ीमरखेड़ा ब्लॉक के 52 गांव मे तथा दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और जबेरा ब्लॉक के 22 गांव मे समिति कार्यकर्ताओं ने अधिक से अधिक लोगों को सरकारी योजना से जोड़ने का काम किया है। मुख्यतः प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, किसान सम्मान निधि योजना, सामाजिक सुरक्षा योजना को फोकस करते हुये लगभग 550 हितग्राहियों के आवेदन भरवाने का काम किया है। यह भी बताया गया है कि इन सभी आवेदनों पर ग्रामसभा मे जाकर प्रस्तावित भी कराये ताकि आपके आवेदनों पर विचार किया जा सके और पात्र हितग्राही को योजना का लाभ मिल सके।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविर, मानव जीवन विकास समिति ग्राम बिजौरी में दिनांक 6 मार्च से 12 मार्च तक प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार खरे जी के संरक्षण में रासेयो जिला संगठक अधिकारी डॉ रुकमणी प्रताप जी के मार्गदर्शन में कार्यक्रम अधिकारी डॉ माधुरी गर्ग के निर्देशन में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के विशेष सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शिविर में सुबह योग व्यायाम और परियोजना कार्य मे शिविर परिसर की साफ सफाई सोख्ता गड्ढे का निर्माण और रासेयो की शान रैली निकली गई। बौद्धिक सत्र में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह जी के आतिथ्य में वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य और उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया। तत्पश्चात देशी खेल सीखे व खेले गए जिसमे कितने भाई कितने लीडर लीडर चाल बदल आदि खेल खेले गए। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी स्वयंसेवको ने लोकगीत लोकनृत्य किये गए व सभी ने सांस्कृतिक संध्या का आनंद लिया।

नवाचार

ग्राम सभा जागरूकता अभियान

मानव जीवन विकास समिति, अपने कार्यक्षेत्र के 150 गांव मे ग्रामसभा पूर्व ग्रामसभा जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। गांव की दिवारों मे जगह जगह दिवार लेखन, जागरूकता बैठक कर ग्रामीणों को अपनी समस्याओं को ग्रामसभा मे प्रस्तावित कराने अधिक संख्या मे भागीदारी करने जागरूक किया गया।

जागरूकता कार्यक्रम से ग्रामसभा मे लगभग 30 से 40 प्रतिशत अधिक लोगों की उपस्थिति बढ़ी है।

मतदाता जागरूकता अभियान

मानव जीवन विकास समिति ने कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 80 गांवों में लगभग 2000 दीवारों पर मतदाता जागरूकता नारे लेखन किया है और मतदाताओं से संवाद कर बड़ी संख्या में बिना भेदभाव और दबाव के मतदान करने की अपील की है। समिति कार्यकताओं ने कार्यक्षेत्र के गांव मे जगह–जगह बैठक आयोजित कर लोगों को अधिक से अधिक जागरूक करने का काम किया है। कार्यक्रमो की जागरूकता से 50 से 60 प्रतिशत मतदान का आंकड़ा बढ़ा है यह बहुत बड़ी उपलब्धि रही है।

उपलब्धियां

क्र.	गतिविधि विवरण	यूनिट	प्रगति
1	**वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) का कार्यान्वयन**		
1.1	व्यक्तिगत नए वन अधिकार दावे	परिवार	962
1.2	व्यक्तिगत दावो के पुनर्विचार हेतु आवेदन	परिवार	2166
1.3	व्यक्तिगत दावो का भौतिक सत्यापन	परिवार	152
1.4	सामुदायिक वन अधिकार दावे	गाँव	6
1.5	वन अधिकार समितियों का गठन	समिति	30
1.6	वन अधिकार समिति सदस्यों का भ्रमण (मेंढा लेखा गढ़ चिरोली महाराष्ट्र)	प्रतिभागी	30
1.7	वन अधिकार समितियों का प्रशिक्षण	प्रशिक्षण	62
2	**टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना**		
2.1	श्री विधि से खेती	किसान	1299
2.2	मिलेट (कोदो कुटकी एवं रागी) कि खेती करने वाले किसान	किसान	1228
2.3	दलहन खेती (तुअर, मूंग, उड़द और चना) को बढ़ावा	किसान	3838
2.4	उद्यानिकी विभाग के सहयोग से व्यावसायिक स्तर पर सब्जी की खेती को बढ़ावा।	किसान	768
2.5	किचन गार्डन प्रमोशन	परिवार	5568
2.6	जैविक खाद एवं दवाइयां बनाने वाले किसान	परिवार	4860
2.7	वर्मी कम्पोस्ट, नाडेप एवं भू नाडेप बनवाए गए	नग	3590
2.8	ग्राम विकास समिति द्वारा संचालित बीज बैंक	बीज बैंक	65
2.9	कुल संकलित बीज (23 प्रकार के बीज)	कुंटल में	326
2.1	स्वयं सहायता समूह द्वारा संचालित जैव उत्पाद इकाई	इकाई	18
2.11	NPM फसल प्रमाणिकरण	किसान	360
3	**पशु पालन**		
3.1	बकरी पालन	परिवार	161
3.2	पशु चिकित्सा विभाग की योजनाओं के सहयोग से पशुओं का टीकाकरण	परिवार	3651
3.3	कुक्कुट संवर्धन (पशु चिकित्सा विभाग की पिछवाड़े कुक्कुट योजनाओं के सहयोग से)	परिवार	395
3.4	मत्स्य पालन संवर्धन (मत्स्य पालन विभाग की योजनाओं के सहयोग से)	परिवार	89
3.5	अज़ोला प्रमोशन	परिवार	432
4	**ग्राम स्तरीय संस्थाएँ एवं ग्रामीण पर्यटन**		
4.1	स्वयं सहायता समूह का क्षमतावर्धन	समूह	360
4.2	ग्राम विकास समिति का गठन	समिति	30
4.3	ग्राम विकास समिति का क्षमतावर्धन	समिति	155
4.4	वन अधिकार समिति का गठन एवं क्षमतावर्धन	समिति	30
4.5	FPO के सदस्यों का क्षमता वर्धन	कार्यशाला	5
4.6	ग्रामीण पर्यटन समिति का गठन एवं क्षमतावर्धन	समिति	7
4.6	MPTB कि होमस्टे योजना के तहत मकान निर्माण	परिवार	7
4.7	NPM समूहों का गठन एवं क्षमतावर्धन	समूह	75
5	**भूमि एवं जल संरक्षण**		
5.1	भूमि समतलीकरण/फील्ड बंडिंग	परिवार	190

5.2	चेक डैम/स्टॉप डैम	संख्या	12
5.3	सामुदायिक तलब	संख्या	9
5.4	खेत तालाब	संख्या	66
5.5	कुआँ/खुदा कुआँ/रिंग कुआँ/टांका	संख्या	72
5.6	बोरी बांध/ड्रम बांध/कोई अन्य बांध	संख्या	60
5.7	पेड़ लगाना	परिवार	2240
5.8	कंटूर ट्रेच	संख्या	1426
6	**सरकारी योजनाओं का लाभ**		
6.1	उज्जवला योजना	परिवार	1476
6.2	पीएम सुरक्षा एवं जीवन ज्योति बीमा योजना	परिवार	2819
6.3	सामजिक सुरक्षा योजना	परिवार	324
6.4	पीएम फसल बीमा योजना	परिवार	1574
6.5	पीएम किसान सम्मान निधि योजना	परिवार	5738
6.6	किसान क्रेडिट कार्ड योजना	परिवार	253
6.7	कृषि विभाग कि फसल प्रदर्शन योजना से लाभान्वित	परिवार	1658
6.8	कृषि विभाग एवं उद्यान विभाग कि पाइप एवं स्प्रिंकलर योजना से लाभान्वित	परिवार	175
6.9	कृषि विभाग कि कृषि यन्त्र वितरण योजना के अन्तरगत स्प्रे पम्प से लाभान्वित	परिवार	52
6.1	संबल योजना से लाभान्वित	परिवार	28
7	**प्रशिक्षण एवं कार्यशाला**		
7.1	JNKVV जबलपुर में किसान भ्रमण	संख्या	3
7.2	जैविक खेती पर किसानो का प्रशिक्षण	संख्या	246
7.3	सरकारी विभागों के साथ इंटरफ़ेस मीटिंग	संख्या	118
7.4	ग्राम नेताओ का प्रशिक्षण	संख्या	36
7.5	स्वयं सहायता समूह के पदाधिकारीयो का प्रशिक्षण	संख्या	9
7.6	कृषि विज्ञान केंद्र में अलग अलग विषयो पर प्रशिक्षण	संख्या	13
7.7	कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृषि विभाग द्वारा फील्ड विजिट एवं प्रशिक्षण	संख्या	36
7.8	सरकारी विभाग के साथ जिला स्तरीय एडवोकेसी बैठक।	संख्या	3
7.1	सरकारी विभाग के साथ ब्लॉक स्तरीय एडवोकेसी बैठक।	संख्या	4
7.11	प्राकृतिक खेती पर किसानो को प्रशिक्षण	प्रशिक्षण	930
7.12	आयुष विभाग के द्वारा ओषधीय फसलो पर प्रशिक्षण	संख्या	1
7.13	FPO पर प्रशिक्षण	संख्या	5
7.14	NPM प्रमाणिकरण पर टीम एवं किसानो को प्रशिक्षण	संख्या	215
7.15	NPM आंतरिक अंकेषण पर टीम को प्रशिक्षण	संख्या	5
7.16	संविधान से समाधान पर आयोजित प्रशिक्षण	संख्या	2
7.17	ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु चयनित हितग्राहियों का भ्रमण	संख्या	4
8	**अन्य गतिविधियाँ**		
8.1	कुपोषण से सुपोषण अभियान के तहत पोषण कीट वितरण	संख्या	400
8.2	मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत गाव गाव में दीवाल लेखन	संख्या	1240

परियोजनाऐं: –

- भारत रूरल लाईलीहुड फाउण्डेशन
- एन.सी.एन.एफ. प्रोग्राम
- फोर्ड फाउण्डेशन
- अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन
- एसीसी/सीएसआर परियोजना
- मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड (ग्रामीण पर्यटन विकास कार्यक्रम)
- नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक)
- नवांकुर परियोजना
- महाकौशल आर्थिक कार्यक्रम
- इंटरनेशनल गांधीयन इंस्टीट्यूट फार नॉन वालेंस पीस (एकता महिला मंच)
- न्यू वर्ल्ड फाउण्डेशन (एकता महिला मंच)
- शशी सपोर्ट एसोसिएशन (शिक्षा सपोर्ट, रिस्क सपोर्ट, विलेज डवलपमेंट प्रोजेक्ट)
- शशी सपोर्ट एसोसिएशन (सिल्विया एण्ड हंस प्रोजेक्ट) रिस्क सपोर्ट
- जेम एण्ड ज्वेलरी रिलीफ फाउण्डेशन (राहत कार्य)
- आरएमआई प्रोजेक्ट

आगामी योजना

- नाबार्ड की वाड़ी परियोजना एवं हरित भारत फण्ड परियोजना का सफल संचालन एवं क्रियान्वयन करना|
- नवगठित संगम बी .डी .FPO के सहयोग से किसान उत्पादों का एकत्रीकरण एवं विक्रय|
- अलाइव FPO के माध्यम से मसाले एवं मोटे अनाज कोदो), कुटकी, रागी एवं ज्वारका प्रसंस्करण कर बड़े स्तर पर बाजार में बेंचना|
- अलगअलग विषयो -अलग क्षेत्रो हेतु अलग - पर प्रोजेक्ट प्रपोजल सबमिट करना|
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु नवचयनित ग्रामो में कार्य की शुरात करना 5|
- दमोह एवं मैहर जिले हेतु वाड़ी या वाटरशेड पर नाबार्ड को प्रपोजल देना|
- किसानो का 1000NPM फसल प्रमाणिकरण करना|
- अलग अलग परियोजना के सहयोग से हजार 40पोधे लगवाना|
- कार्य क्षेत्र के गावों को कुपोषण मुक्त बनाने की पहल करना |
- ट्रेनिंग सेण्टर में साफ़ सफाई एवं प्रबंधन पर विशेष जोर देना है|

उत्कृष्ट कृषि कार्य पर समिति कार्यकर्ताओं को पुरूस्कार

न्यूज कवरेज

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ

कटनी , अग्निबाण। मानव जीवन विकास समिति द्वारा जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है। बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नं.01, बनहरा, बरगवां नं.02, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नं.01; नैगवा मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ मे जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सरई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है। जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा।

बीज बैंक केन्द्र मे विलुप्त होने की कगार मे जो प्रजाती है जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संगृहीत करके रखा है आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जागेा। जैव संसाधन केन्द्र मे जैव कीटनासी दवाईया, फूलवर्द्धक दवाईया समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

बीज बैंक का हुआ उद्घाटन

सिंग्रामपुर। मानव जीवन विकास समिति के तत्वाधान में जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए बीज बैंक केंद्र की स्थापना जनपद जबेरा के ग्राम पंचायत पिपरिया, सहसना में जनपद सदस्य जय सिंह प्रतिनिधि ने बैंक मे रिबन काटकर उद्घाटन किया। काली स्व सहायता समूह की अध्यक्ष कोशध्यक्ष ने बात रखते हुए कहा समूह की मंशा अनुसार बीज बैंक का संचालन किया जाएगा। बीज बैंक संचालक स्वयं सहायता समूह की महिलाएं एवं ग्राम विकास समिति द्वारा किया जाना तय किया गया है। बीज बैंक के केंद्र में विलुप्त होने कि कगार में जो प्रजाति हैं जैसे कोदो कुटकी बाजरा रागी उसको संग्रहित करके रखा जाएगा। आगामी वर्ष में फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जा सके। पंचायत कार्यकर्ता अर्चना गोंड, कैलाश टेकाम कलूमर अनिल धुर्वे ने भी बीज बैंक के बारे में जानकारी दी। उद्घाटन में गांव के ग्राम विकास समिति के सदस्य एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाएं की उपस्थिति रही। सभी ने ग्राम वासियों ने बीज बैंक बनने से सभी ग्राम वासियों ने सराहना की।

समदई में बीज मेले का आयोजन कर जैविक खेती का बताया महत्व

भास्कर न्यूज। तेंदूखेड़ा

जनपद पंचायत तेंदूखेड़ा के तहत आने वाली ग्राम पंचायत समदई में मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से बीज मेले का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना था। बीज बैंक केंद्रों की स्थापना ब्लॉक के विभिन्न गांवों में की गई है। जिनका संचालन स्व-सहायता समूह की महिलाओं और ग्राम विकास समितियों की मंशानुसार किया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह ने बताया कि बीज बैंक संचालक स्व-सहायता समूह की महिलाएं एवं ग्राम विकास समितियों द्वारा बिलुप्त होने की कगार में जो प्रजाति है, जैसे कोदो, ज्वार, समा, बाजरा, कुटकी, रागी, उसको संग्रहित कर के रखा जा रहा है। ये बीज फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जाएगा। परियोजना समंवयक राधिका तिवारी ने किसानों के द्वारा चयन किया गया अनाज एवं सब्जियों के परम्परागत बीजों के संबंध में जानकारी दी। राजीव गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि जल, जंगल, जमीन, बीज और जानवर को संरक्षित कर किसानो को आगे बढ़ने की जरूरत है। पेड़ों और पौधों की संख्या घटती जा रही है, जबकि मानव जीवन के लिए ऑक्सीजन बेहद जरूरी है। प्राकृतिक खेती करने की जरूरत है क्योंकि यहां रासायनिक खाद एवं दवाईयों का अधिक उपयोग नहीं किया गया है, जहां रासायनिक खाद और दवाईयों का उपयोग अधिक मात्रा में किया गया है, वहां की भूमि रेतेली और ठोस व बंजर हो रही है। खेतों में केंचुआ नहीं है, आनाज के लिए पौष्टिक तत्व समाप्त हो रहे हैं। समिति ब्लॉक समन्वयक घनश्याम प्रसाद रायकवार ने कहा कि शून्य बजट की खेती के लिए परम्परागत हर बखर बैल का ही उपयोग करने से ही लाभ कमाया जा सकता है। खेती में जैविक खाद, जैविक दवाईयों का उपयोग करना चाहिए। आसपास जो पेड़-पौधे हैं उनका संरक्षण जरूरी है। कार्यक्रम में 16 ग्रामों के 62 किसानों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

किसान कार्यशाला संपन्न

तेंदूखेड़ा। ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम बमनोदा के खदरीहार में परंपरागत प्राकृतिक जैविक खेती पर एक दिवसीय किसान कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें उपस्थित किसानों ने परंपरागत खेती पर विचार रखते हुए कहा कि पहले मोंटे अनाज जैसे कोदों, कुटकी, रागी, बाजरा, ज्वार, मक्का आदि की खेती होती थी। सब्जी के साथ ही अन्य खाद्य मसाले घर के ही होते थे, जिनका उपयोग भोजन में किया जाता था। साथ ही हर किसान के पास मवेशी होते थे, जिससे दूध, दही, घी की कमी नहीं होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। जिसका असर भी मानव जीवन पर पड़ रहा है। देशी इलाज, पुराने अनाज बीजों का उत्पादन लुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें अभी से वापस लाना होगा, तभी मानव जीवन संतुलन आने वाले समय में संभव होगा। किसान नंदलाल ने बताया कि उन्होंने हाईब्रिड किस्म गेहूं बोनी की थी, जिसमें जैविक खाद का उपयोग किया था। जिससे अच्छा फायदा हुआ है। यदि पूर्ण रूप से जैविक खेती की जाए तो बोनी के बाद 3 पानी से लगभग एक एकड़ में अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। इस दौरान घनश्याम, राजेश कुमार पंवार, मानसींग यादव सहित अन्य ने भी अपनी बात रखी।

परंपरागत प्राकृतिक खेती पर कार्यशाला हुई

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

कृषि विज्ञान केंद्र और मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से ग्राम बमनोदा के खदरीहार में परंपरागत प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला हुई। जिसमें किसानों ने बताया पहले के समय में मोटे अनाज कोदों, कुटकी, रागी, बाजरा, ज्वार, मक्का आदि की जानकारी दी।

बताया गया यदि पूर्ण रूप से जैविक खेती की जाएं तो बोनी के बाद 3 पानी से लगभग एक एकड़ में 20 से ऊपर का उत्पादन लिया जा सकता है। संस्था ब्लांक समन्वयक घनश्याम ने बताया इसी तरह स्वयं के उत्पादन से पापड़ बनाना, पशुपालन के दूध से पनीर बनाना, दाल बनाना, मिर्च उत्पादन से एवं धनियां उत्पादन से पाउडर तैयार करना जैसे खाद्य सामग्री पैंकिंग तक के फायदे पर फोकस रखा गया। बैठक में मौसम वैज्ञानिक राजेश कुमार मौजूद रहे। कार्यकर्ता मानसींग यादव ने बताया पर्यावरण संतुलन को लेकर चर्चा की। इस दौरान नंदलाल गौड़, हाक्म सींग, रमेश सींग, जगदीश, हल्लकेभाई, सुरेश, प्रीतम सिंह गौड़, सूरतसींग, संतोष, हीरासीग, राजेश, लट्टू, कुंवर मन, विशाल, बाली सिंह, देवकरन, राजकुमार के अलावा किसानों की उपस्थिति रही।

जैव संसाधन और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना

80 गांव के 8 हजार किसानों को मिलेगा लाभ

हरिभूमि न्यूज ›› कटनी

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने मानव जीवन विकास समिति द्वारा जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई। जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ। मानव जीवन विकास समिति द्वारा कटनी जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 80 गांव मे 8000 किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

इसी परिपेक्ष्य मे किसानों की सुविधा को ध्यान मे रखते हुये जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना कर किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नं.01, बनहरा, बरगवां नं.02, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नं.01 ; नैगवा मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ मे जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, देगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सर्रई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है।

जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाईयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से उचित मूल्य पर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया से समूह व किसान दोनो की आर्थिक स्थिति मे बदलाव आयेगा।

बीज बैंक केन्द्र मे विलुप्त होने की कगार मे जो प्रजाती है जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संगृहीत करके रखा है आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जागेा।

जैव संसाधन केन्द्र मे जैव कीटनासी दवाईया, फूलवर्द्धक दवाईया समूह के माध्यम से तैयार कर केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का सात दिवसीय शिविर आयोजित

जागरण, कटनी। शासकीय तिलक तकोत्तर महाविद्यालय कटनी की राष्ट्रीय सेवा जना इकाई का सात दिवसीय विशेष शिविरए नव जीवन विकास समिति ग्राम बिजौरी में 6 र्च से 12 मार्च तक प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार खरे संरक्षण में रासेयो जिला संगठक अधिकारी डॉ कमणी प्रताप के मार्गदर्शन में कार्यक्रम धिकारी डॉ माधुरी गर्ग के निर्देशन में संचालित रहा है। मानव जीवन विकास समिति सचिव र्भय सिंह का विशेष सहयोग प्राप्त है।

शिविर के द्वितीय दिवस में सुबह योगए याम, परियोजना कार्य मे शिविर परिसर की साफ सफाई, सोख्ता गड्डे का निर्माण और रासेयो की शान रैली, पोस्ट का निर्माण किया गया। बौद्धिक सत्र में मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के आतिथ्य में वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य और उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया। तत्पश्चात देशी खेल सीखे व खेले गए जिसमे कितने भाई कितने लीडर, लीडर चाल बदल आदि खेल खेले गए। इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी स्वयंसेवको ने लोकगीत, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के लोकनृत्य किये गए व सभी ने सांस्कृतिक संध्या का आनंद लिया।

मानव जीवन विकास समिति द्वारा की गई पहल, 80 गांवों के लोगों को मिलेगा लाभ

जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैव संसाधन केंद्र और बीज बैंक शुरू

पत्रिका सिटी रिपोर्टर patrika.com

कटनी. मानव जीवन विकास समिति के द्वारा क्षेत्र व जिले में जैविक खेती सहित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र की स्थापना की गई है। इस सुविधा के शुरू होने से जिले के 80 गांव से 8000 किसानों को मिलेगा लाभ। मानव जीवन विकास समिति द्वारा बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के किसानों के साथ आजीविका आधारित परियोजना का संचालन किया जा रहा है। किसानों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने की पहल की जा रही है।

बड़वारा ब्लॉक के 4 गांव महगवां, भजिया, भादावर और पठरा मे जैव संसाधन केन्द्र और 7 गांव भदौरा नंबर एक, बनहरा, बरगवां नंबर दो, गोपालपुर, बिलायतखुर्द, नन्हवारा और बरगवां नंबर एक, नैगवां में बीज बैंक केंद्र की स्थापना की गई है। ढीमरखेड़ा ब्लॉक के 5 गांव खंदवारा, दैगवा, सलैया, पिपरिया चांद, और जामुनचुआ में जैव संसाधन केन्द्र और 10 गांव खंदवारा, दैगवा, भलवारा, सलैया, बांध, दादर सिहुड़ी, सरई, कुदरा, सर्रा और पहरूआ मे बीज बैंक केंद्र की स्थापना की गई है।

महिला समूह चलाएंगे केंद्र- जैव संसाधन केन्द्र और बीज बैंक केन्द्र का संचालन गांव की स्व.सहायता समूह की महिला एवं ग्राम विकास समिति सदस्यों द्वारा किया जाना तय किया गया है। गांव-गांव मे संचालित समूह की महिलाओं द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने जैविक दवाइयां और जैविक खाद का निर्माण कर स्थापित केन्द्र के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा। बीज बैंक केंद्र में विलुप्त होने की कगार में जो प्रजाति हैं जैसे कोदो, कुटकी, रागी उसे भी संग्रकहत करके रखा है। आगामी वर्ष मे फसल उत्पादन के समय किसानों को आसानी से उपलब्ध कराया जाएगा। जैव संसाधन केंद्र में जैव कीटनाशी दवाइयां, फूलवर्धक दवाइयां समूह के माध्यम से तैयार कर किसानों को उपलब्ध कराया जाएगा।

From labourers to decision-makers

Inspiring tales of 3 women sarpanchs

Having experienced poverty, they know what the poor need, are working for their welfare

SMITA
city.bhopal@fpj.co.in

Three women sarpanchs in Madhya Pradesh began their life as manual labourers but are now the decision-makers in their villages. They are barely educated but know the importance of education. And having experienced poverty themselves, they have deep empathy for the poor and know their needs well. They have transformed their panchayats by fulfilling the basic needs of the people - good roads, adequate drinking water, schools, toilets and employment. Here are the profiles of the doughty women who are trying to make life better for their people.

'Pahle majdoori karte the, ab dete hain'

37-year-old Ram Bai Nayak is the first and the youngest women Sarpanch of village panchayat Tanda. Before becoming Sarpanch, she was a farm labourer. She has hardly studied up to grade five. She ensured the construction of two water tanks facilitating individual drinking water supply to each house. She arranged free education for masons children. She was also instrumental in ensuring that over 48 families have access to toilets. She plans to upgrade the middle school to a high school. "I had never thought that a woman labourer like me can become the decision-maker for my village. Pahle majdoori karte the, ab gaon ke logon ko majdoori de rahe hain MGNREGA ke anargart," she says.

Taps in 800 homes

Kusum Rani (32) is the first SC and the second women Sarpanch of Bamnaud village panchayat in the Damoh district.

Kusum, who was a construction worker, is happy that she could solve the perennial drinking water crisis in her panchayat. "I persuaded the villagers to get taps installed at their homes and now 800 homes in my area get piped water supply under the Jal Jeevan Mission." And concrete-cement roads have replaced the muddy streets in the five hamlets.

'Know what poverty means'

Kala Bai (62), the sarpanch of Aredi village Panchayat in the Bhopal district is illiterate. But that didn't stop her from appreciating the need for a higher secondary school in her village. "After clearing grade 5, our children had to cross a nullah and walk to another village to attend school. So I tried and succeeded in getting a higher secondary school opened here," said the Sarpanch, who used to break stones to earn a living. Over the past two years, she has got 500 ration, 600 Ayushman and 50 Karmakar cards made for the residents. Her village now boasts of CC roads. "Ab to ghar-ghar tak auto aa jataa hai," she says. Kala Baai's priorities are clear. "I have experienced poverty. And so I want to help the poor," she says.

plessamachar.in

अनूपपुर - दमोह - कटनी

कटनी जिले को कुपोषणमुक्त बनाने मानव जीवन विकास समिति की अभिनव प

सर्वे कर 80 गांवों के 330 कुपोषित
को सुपोषित बनाने समिति ने लिया

पीपुल्स संवाददाता ● कटनी
मो.नं. 9584049557

मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त करने काम कर रही है। इसी के साथ ही कलेक्टर अवि प्रसाद की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनबाड़ियों का सर्वे कराकर

इसी क्रम में 31 जनवरी को बड़वारा के ग्राम पंचायत भवन और ढीमरखेड़ा के मंगल भवन में कार्यक्रम आयोजित

उपस्थित होकर पोषण आहार किट प्राप्त कर खुशी जाहिर की। वहीं बड़वारा में आयोजित कार्यक्रम के

नही बैठेंगे। ऐसे स वाटिका लगवायेंगे स्वास्थ्य हो सके। इसके बाद परिवार दिशा में ले जाकर उत्पादन, पशुपा व्यावसाय से जोड़ इस दौरान मान समिति सचिव नि बाई, नीरज सिंह, जायसवाल सहित की भागीदारी रही समाजसेवी संतोष ज्योति बैरागी पद्ध

कुपोषण से सुपोषण की अभिनव पहल : 33 पंचायतों के 80 गांव की 115 आंगनबाड़ियों का सर्वे

सुपोषित होंगे गोद लिए गए 330 बच्चे

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त काम कर ही रही है। कलेक्टर के आग्रह पर समिति ने बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायतों के 80 गांव की 115 आंगनवाडियों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। 31 जनवरी 2023 को

बच्चों को पोषण किट का वितरण किया गया। इस दौरान मौके पर मौजूद अधिकारियों, कर्मचारियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं समाज सेवियों ने सभी माताओं से अपील की है कि बच्चों को सुपोषण बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दें। बड़वारा मे आयोजित कार्यक्रम के दौरान मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा कि पोषण आहार किट देने के बाद ऐसे सभी परिवार में पोषण वाटिका लगवायेंगे ताकि पूरा परिवार स्वास्थ्य होगा। इसके बाद परिवार को स्वरोजगार की दिशा में

करेंगे। कार्यक्रम में बड़वारा ब्लॉक से महिला बाल विकास विभाग अधिकारी बड़वारा, सेक्टर प्रभारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह, समस्त समिति स्टॉफ, अहिल्या बाई पूर्व सरपंच बरछेका, नीरज सिंह, राजेश सिंह, महेन्द्र जायसवाल सहित अन्य समाजसेवियों की भागीदारी रही है। ढीमरखेड़ा से समाजसेवी संतोष दुबे, पारस पटेल, ज्योति बैरागी, राजेश व्यौहार, जितेन्द्र अरोरा, दीपू बैरागी, श्रीकान्त पटेल, पर्यवेक्षक मंजू मिश्रा, भावना साहू, मीना तिवारी, अनुराधा चैबे, अनीता प्रधान, एएनएम प्रतिक्षा त्रिपाठी, रमाकान्त मिश्रा, प्रहलाद सोनी, मानव जीवन

प्रदेश वॉच

आमला/चंदेरी/कुरावर/सारनी/सागर/कटनी/बरेली — भोपाल, शुक्रवार

कुपोषण से सुपोषण की अभिनव पहल

जिला कलेक्टर महोदय की अपील पर मानव जीवन विकास समिति ने 33

कटनी संवाददाता।

मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त काम कर ही रही है। इसी के साथ ही जिला कलेक्टर महोदय के 25/12/2023 की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनवाड़ीयों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। हाल ही मे 31 जनवरी 2023 की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनवाड़ीयों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। हाल ही मे 31 जनवरी 2023 को बड़वारा के ग्राम पंचायत भवन मे और ढीमरखेड़ा के मंगल भवन मे कार्यक्रम आयोजित कर प्रति ब्लॉक 100-100 बच्चों को पोषण किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुपोषित बच्चे एवं माताऐं होकर सुपोषित (पोषण आहा प्राप्त कर खुशी जाहिर की मातृश चेहरे खुशी से भर गये। अधिकारी, कर्मचारीए, आ कार्यकर्ता एवं समाज सेवियो माताओं से अपील की है कि ब सुपोषण बनाने मे आपका सहयोग देना होगा। पोषण अलावा बच्चों के देखभाल, सा और खानपान के समय मे देना है तभी तो बच्चे सुपोषित होंगे। कु कलंक को जड़ से खत्म कर आईये हम सब मिलकर इस मि सफल बनाते है। बड़वारा मे कार्यक्रम के दौरान मानव जीवन समिति सचिव निर्भय सिंह ने

7 दैनिक मध्यप्रदेश — कटनी, रविवार 04 फरवरी 2024

कुपोषण से सुपोषण की अभिनव पहल : मानव जीवन विकास समिति ने 330 बच्चों को लिया गोद

जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक के बच्चों को सुपोषित बनायेंगे

कटनी दैमप्र। मानव जीवन विकास समिति विगत कई वर्षो से जिला प्रशासन और महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ मिलकर जिले को कुपोषण मुक्त काम कर ही रही है। साथ ही कलेक्टर के 25 दिसंबर 2023 की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनबाड़ियों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया है। हाल ही में 31 जनवरी की अपील के अनुसार समिति ने जिले के बड़वारा और ढीमरखेड़ा ब्लॉक की 33 पंचायत के 80 गांव की 115 आंगनबाड़ियों का सर्वे कराकर कुपोषित व अतिकुपोषित 330 बच्चों को गोद लेकर सुपोषित बनाने मिशन चलाया। हाल ही में 31 जनवरी को बड़वारा के ग्राम पंचायत भवन में और ढीमरखेड़ा के मंगल भवन मे कार्यक्रम आयोजित कर प्रति ब्लॉक 100-100 बच्चों को पोषण किट वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुपोषित बच्चे एवं माताऐं उपस्थित होकर सुपोषित (पोषण आहार किट) प्राप्त कर खुशी जाहिर की मातृशक्तियों के चेहरे खुशी से भर गये। उपस्थित अधिकारी, कर्मचारी,आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं समाज सेवियो ने सभी माताओं से अपील की है कि बच्चों को सुपोषित बनाने में आपको महत्वपूर्ण सहयोग देना होगा। पोषण किट के अलावा बच्चों के देखभाल, साफ सफाई और खानपान के समय में ध्यान देना होगा तभी बच्चे सुपोषित होंगे। कुपोषण के कलंक को जड़ से खत्म करना है तो आईये हम सब मिलकर इस मिशन को सफल बनाते है।

लगवायेंगे पोषण वाटिका

बड़वारा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह ने कहा की हम पोषण आहार किट देने के बाद चुप नही बैठेंगे ऐसे सभी परिवार में पोषण वाटिका लगवायेंगे ताकि पूरा परिवार स्वास्थ्य होगा। इसके बाद परिवार को स्वरोजगार की दिशा में ले जाकर व्यवसायिक सब्जी उत्पादन, पशुपालन एवं अन्य व्यावसाय से जोड़ने प्रयास करेंगे।

इनकी रही उपस्थिति

कार्यक्रम में बड़वारा ब्लॉक से महिला बाल विकास विभाग अधिकारी बड़वारा, सेक्टर प्रभारी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह , समस्त समिति स्टॉफ, अहिल्या बाई पूर्व सरपंच बरछेका, नीरज सिंह, राजेश सिंह, महेन्द्र जायसवाल सहित अन्य समाजसेवियो की भागीदारी रही है। ढीमरखेड़ा से समाजसेवी संतोष दुबे, पारस पटेल, ज्योति बैरागी, राजेश व्यौहार, जितेन्द्र अरोरा, दीपू बैरागी, श्रीकान्त पटेल, पर्यवेक्षक मंजू मिश्रा, भावना साहू, मीना तिवारी, अनुराधा चैबे, अनीता प्रधान, एएनएम प्रतिक्षा त्रिपाठी, रमाकान्त मिश्रा, प्रहलाद सोनी, मानव जीवन विकास समिति से चन्द्रपाल कुशवाहा एवं सभी कार्यकर्ता साथी की उपस्थिति रही है।

औषधीय पौधो की खेती से किसानों की आर्थिक उन्नति हेतु प्रशिक्षण

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत परियोजना (देवारण्य योजना) के उचित कियान्वयन हेतु किसानों को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन आयुष विभाग जिला कटनी और कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिको के सहयोग द्वारा मानव जीवन विकास समिति ग्राम बिजौरी मझगवा में आयोजित किया गया हैं। जिसमें किसानो को अश्वगंधा, शतावर एवं तुलसी की कृषि तकनीक सग्रहण तकनीक एवं स्वैच्छिक प्रमाणन आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण का शुभारम्भ भगवान धनवंतरि जी का पूजन एवं माल्यार्पण कर किया गया। प्रशिक्षण में वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिकों द्वारा वर्तमान में औषधीय पौधे की मांग एवं मार्केटिंग आदि विषयों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में जिला आयुष अधिकारी डॉ० रितु द्विवेदी, कृषि वैज्ञानिक डॉ० के.पी. द्विवेदी, संचालक निर्भय सिंह, डॉ० एस.एस. सारस्वत सेवानिवृत्ति उद्यानिकी अधिकारी, डॉ० प्रे सिंह राठौर सहायक नोडल अधिकारी देवारण योजना, डॉ० हेम सिंह बड़वारा ब्लॉक नोड अधिकारी, डॉ० प्रशांत कुमार रौठी ब्लॉ नोडल अधिकारी, डॉ० अब्दुल मु विजयराघवगढ़ ब्लॉक नोडल अधिकारी अ लगभग 40-45 किसान उपस्थित रहे।

धन्यवाद!

मानव जीवन विकास समिति

पता : ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवां (बरही रोड), जिला कटनी म.प्र. पिन कोडः 483501
मो.नं. 9425157561
website : www.mjvs.org
Email : mjvskatni@gmail.com
Blogger - https://mjvskatni.blogspot.com/
Twitter - https://twitter.com/mjvs_katni_mp
Facebook - https://www.facebook.com/ngomjvskatni/
Instagram - https://www.instagram.com/manavjeevanvikassamiti/
Youtube- https://www.youtube.com/channel/UCiEnoE5h_oePCKrsea7rLWQ
Linkedin – https://www.linkedin.com/in/manav-jeevan-vikas-samiti-0b7559266